Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

मा पेह पुरापणामए।
भुक्त-भोगों की ओर मत देखो।

❀ ❀ ❀

अभिकंखे उवहिं धूणित्तए।
उपधिमान और कर्म को दूर करने की अभिलाषा करो।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 14 • 10 - 16 जनवरी, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 08-01-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

सक्षमता में भी संयम रखना बड़प्पन है : आचार्यश्री महाश्रमण

भिक्षु साधना केंद्र, ३० दिसंबर, २०२१

पूज्यप्रवर के स्वागत में पूरा जयपुर उमड़ पड़ा। राजस्थान के खाद्य व आपूर्ति मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास भी उपस्थित थे। पूज्यप्रवर की आज जयपुर के विशिष्ट लोगों से भी वार्तालाप हुआ।

परम पावन ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे भीतर चार कषाय हैं–वृत्तियाँ हैं। आदमी के भीतर दुर्वृतियाँ भी हो सकती हैं, तो सद्वृत्तियाँ भी रहती हैं। चार कषाय को चार दुर्वृतियाँ कहा जा सकता है। क्रोध, मान, मान और लोभ। तात्त्विक गहरी भाषा में कहें तो कषायों का योग में प्रयोग हो जाता है।

ये दुर्वृतियाँ जब तक उपशांत अवस्था में रहती हैं, तो संभवतः ज्यादा नुकसान हमारा नहीं कर सकती। उभर जाती है, तब कर्मों का ज्यादा बंध कराने वाली बन सकती हैं, जैसे राख में ढकी आग।

हमारी साधना बढ़े कि कषाय उत्तेजित न हो, शांत रहे। कभी पूर्णतया वीतराग भी बने। सम्यक्त्व है, कषाय शक्ति की साधना है, तो कभी न कभी किसी जन्म में वीतरागता प्राप्त होनी ही होती है, मोक्ष मिलता ही है।

दुर्वृतियों में एक है–गुस्सा। गुस्सा आने पर आदमी न बोलने की बात भी बोल देता है। चेहरा विकृत हो सकता है। आलस्य मनुष्यों का वह शत्रु है, जो शरीर में रहकर आदमी का नुकसान करता है। गुस्सा भी आदमी का शत्रु है। हमें प्रयास यह करना चाहिए कि मेरा गुस्सा शांत रहे।

तीन स्थितियाँ हैं–एक आदमी कमजोरी के कारण गुस्से में बोल नहीं सकता है। यह दुर्बलता है। दूसरी स्थिति-आदमी गुस्सा कर भी सकता है, वापस सुना भी सकता है। दो की चार सुना भी देता है। इसमें कुछ ताकत है। तीसरी स्थिति-आदमी में ताकत है, दो की चार सुना सकता है, सक्षम होने पर भी क्षमा है। ईंट का जवाब पत्थर से नहीं, फूलों से देता है। वापस कुछ नहीं बोलता। यह बड़ी वीरता है, सक्षम होने पर भी क्षमाशीलता रखना।

सक्षमता में भी संयम रख लेना वास्तव में बड़ी क्षमा है। सहन कर लेता है, वो बड़े का बड़प्पन है। हमें प्रयास यह करना चाहिए कि कमजोर तो नहीं रहें पर गुस्सैल भी न रहें। शक्तिशाली होने पर भी क्षमा रखें। 'क्षमा वीरस्य भूषणम्'। गुस्सा हमारा शत्रु है। इसको शक्ति से पछाड़ने का प्रयास करना चाहिए। गुस्से को उपशम से शांत करो। यह एक दृष्टांत से समझाया कि जो गुस्सा नहीं करता वो सामने वाले को कमजोर कर सकता है। सामने वाला उसके सामने झुक जाता है।

जहाँ घास-फूस है। वहाँ चिंगारी पड़ती है, तो लपटें उठ सकती हैं। जहाँ सूखा मैदान है, वहाँ कितनी भी आग पड़े पर लपटें नहीं उठेंगी। शांति से गुस्सा शांत पड़ सकता है। ये गुस्से की दुर्वृति जिसमें जितनी है, उसको हमें जितना हो सके शांत करने का, उपशांत करने का प्रयास करना चाहिए।

आज हम जयपुर के इस श्यामनगर के क्षेत्र में भिक्षु साधना केंद्र में आए हैं। श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री का यह अंतिम चतुर्मास स्थल है। मुनि उदित कुमार जी हमारे साथ हैं, पर मंत्री मुनिश्री किस रूप में हमारे साथ हैं, पता नहीं। श्यामनगर श्रद्धा का अच्छा उपनगर है। सबमें धार्मिक भावना, शनिवार की सामायिक का क्रम चलता रहे। बच्चों में ज्ञानशाला का क्रम चलता रहे। यहाँ की जनता में भी सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति रहे। धार्मिकता की भावना वर्धमान रहे।

पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में महिला मंडल ने त्याग का गुलदस्ता भेंट किया। राजस्थान सरकार के खाद्य व आपूर्ति मंत्री प्रताप सिंह खचरियावास ने नमस्कार महामंत्र और अहिंसा का महत्त्व बताया। उन्होंने कहा कि जैन धर्म के सिद्धांत को अपनाने वाला जैन कहलाता है। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला, आदित्य नाहटा, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेयुप मंत्री सुरेंद्र नाहटा भिक्षु साधना केंद्र अध्यक्ष नवरत्नमल नखत ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

आचार्यश्री महाश्रमण जी राजभवन में महामहीम राज्यपाल कलराज मिश्र एवं मुख्यमंत्री निवास स्थान पर माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से विचार-विमर्श करते हुए

गुरुवार को प्रातः आचार्यप्रवर अपनी धवल सेना संग विद्याधरनगर से प्रस्थित हुए। कुछ किलोमीटर का विहार कर आरएसएस द्वारा संचालित आदर्श विद्या मंदिर में पधारकर विद्यार्थियों को पावन प्रेरणा प्रदान की। आचार्यश्री सिविल लाइंस स्थित राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के आवास पर पधारे तो स्वयं मुख्यमंत्री ने अपने आपास के मुख्य द्वार पर उपस्थित होकर आचार्यश्री का भावपूर्ण स्वागत किया। आचार्यश्री के पावन पदार्पण से स्वयं गहलोत ही नहीं उनका पूरा परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। मुख्यमंत्री ने आचार्यप्रवर को गोचरी करवा स्वयं को धन्य बनाया। आचार्यश्री का गहलोत व परिवार को पावन प्रेरणा प्रदान करने के उपरांत कुछ समय वार्तालाप का भी क्रम रहा। आचार्यश्री वहाँ से प्रस्थित हुए तो पुनः गहलोत आचार्यश्री को मुख्य द्वार तक पहुँचाने के लिए पैदल चले।

उन्हें आशीर्वाद और पावन प्रेरणा प्रदान कर आचार्यश्री महाश्रमण जी राजस्थान के प्रथम नागरिक राज्यपाल कलराज मिश्र के आवास राजभवन में पधारे तो राजभवन की मानो रंगत ही बदल गई। माननीय राज्यपाल मिश्र ने भी आचार्यश्री का भावपूर्ण स्वागत किया। आचार्यश्री ने उन्हें भी पावन प्रेरणा व अपने मंगल आशीष से आच्छादित कर गतिमान हुए तो राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के आवास परिसर में भी पधारे। हालाँकि वसुंधरा राजे की अनुपस्थिति में आवास परिसर के सभी लोगों ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। आचार्यश्री ने सभी को पावन प्रेरणा के साथ नशामुक्ति के संकल्प भी ग्रहण कराए। आचार्यश्री भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत के परिवार पर भी कृपा बरसाने उनके आवास में पधारे और उनके परिजनों को पावन आशीष प्रदान की।

इस प्रकार गुरुवर को तेरापंथ अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी की ऐसी कृपा देख जन-जन भाव-विभोर नजर आ रहा था।

संतों के उपदेश जीवन में उतारने से आत्मा की शुद्धि हो सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

बोराज, ४ जनवरी, २०२२

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी सर्द मौसम में धर्म की अलख जगाने १४ किलोमीटर का विहार कर बोराज गाँव में सरकारी विद्यालय पधारे।

मुख्य प्रवचन में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि प्रश्न है–निर्वाण को कौन प्राप्त कर सकता है? धार्मिक साहित्य में मोक्ष की बात आती है, निर्वाण की बात आती है। दोनों शब्द एकार्थक हो जाते हैं, पर शब्द-शब्द में अंतर भी किया जा सकता है। अंतर किए जाने पर भी शब्द एक-दूसरे के पर्यायवाची हो जाते हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 - 16 जनवरी, 2022

✦ *जो विनीत होता है, उसका विकास होता है। विनीत सुखी और अविनीत दुःखी होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

राग-द्वेष से मुक्त होना साधना का मुख्य लक्ष्य हो : आचार्यश्री महाश्रमण

भाकरोटा, ३१ दिसंबर, २०२१

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता जयपुर में हर क्षेत्र को अपने चरणों से पावन कर रहे हैं। श्यामनगर स्थित तुलसी साधना केंद्र से विहार कर महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल पधारे। स्कूल के विद्यार्थियों को पावन प्रेरणा प्रदान कर दोपहर तीन बजे कॉश्मोस गार्डन पहुँचे। विश्राम कर आचार्यप्रवर ६ किमी विहार कर महापुरा स्थित शृंगार वैली पहुँचे जहाँ रात्रि विश्राम किया।

मुख्य प्रवचन में अनंत आस्था के केंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने कहा है—राग और द्वेष ये दोनों कर्म के बीज हैं। आदमी जो भी पाप-अपराध करता है। उसमें या तो राग भाव की अभिप्रेरणा होती है या द्वेष की। राग और द्वेष ये दोनों न हों तो फिर आदमी अपराध-पाप नहीं कर सकता।

राग और द्वेष इन दोनों में ज्यादा गहरे में राग-भाव होता है। राग हो और द्वेष का अस्तित्व न हो ऐसा नहीं हो सकता, द्वेष के न होने पर भी राग हो सकता है। द्वेष के बिना भी राग का अस्तित्व हो सकता है। दसवें गुणस्थान में राग तो है, परंतु द्वेष नहीं है। राग-द्वेष, कषाय और मोहनीय कर्म ये पाप कर्मों का मूल है।

साधना के क्षेत्र में राग-द्वेष को पतला करना यही मुख्य बात होती है। साधना एकत्व में हो या समूह में राग-द्वेष जीतना अपेक्षित है। प्राचीन साहित्य में एकल विहार की बात भी आती है। उसका अपना महत्त्व है। एकल विहार न करना भी कहीं-कहीं सम्मत होता है। जैसी भी साधना हो राग-द्वेष को पतला करें, यह एक प्रसंग से समझाया कि गुस्सा हमारी कमजोरी है, आ सकता है, पर हम कषाय को पतला करें।

आदमी कहीं भी रहे, उसका गुस्सा कम हो। ज्यादा गुस्सा काम का नहीं। अहंकार को भी कम करें। गुस्से-अहंकार से आदमी बड़ा नहीं बनता है। कषाय व राग-द्वेष मुक्ति होगी तभी मोक्ष मिलेगा।

सन् २०२१ विदाई की तरफ है। इस वर्ष की समीक्षा की जा सकती है। नए वर्ष में क्या करना है, उसका चिंतन भी किया जा सकता है। हम राग-द्वेष मुक्ति की साधना में आगे बढ़ें, यह काम्य है।

आज पन्नालाल बांठिया के फार्म हाउस पर आए हैं। उनके पुत्रों में धर्म संघ की सेवा की भावना रहे, परिवार में अच्छे संस्कार रहें।

राजस्थान के भाजपा अध्यक्ष पूनिया ने भी पूज्यप्रवर से मार्ग में आशीर्वाद लिया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में महेंद्र व राजेंद्र बांठिया एवं पारिवारिकजनों ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। काव्य नाहटा ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि गुस्से में आदमी अंधा हो जाता है। चण्डकौशिक के प्रकरण को समझाया।

संस्कारों से भावित हो विद्यार्थी का जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

जयाचार्य कॉलेज, जयपुर, २९ दिसंबर, २०२१

करुणा के महासागर आचार्यश्री महाश्रमण जी जयपुर भ्रमण करते हुए आज प्रातः तेरापंथ शिक्षण समिति के जयाचार्य कॉलेज पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि वर्तमान अवसर्पिणी काल में इस भरत क्षेत्र में जैन शासन के मंतव्य के अनुसार चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। भगवान ऋषभ प्रथम तीर्थंकर और भगवान महावीर चौबीसवें तीर्थंकर हुए हैं।

२३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ हुए हैं। आज पौष कृष्ण दशमी-भगवान पार्श्वनाथ की जन्म जयंती है। भगवान पार्श्वनाथ को पुरुषादानीय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे आकर्षण के एक केंद्र हैं। लोकप्रिय तीर्थंकर हैं। तीर्थंकर तो सभी समान ज्ञान, चारित्र वाले होते हैं। पर जनमानस में भगवान पार्श्व के प्रति विशेष आकर्षण प्रतीत हो रहा है।

भगवान पार्श्व वर्तमान में भी पुरुषादानीय रूप में प्रतिष्ठित है। धरणेंद्र और पद्मावती भी भगवान पार्श्व से जुड़े हुए हैं। वे भगवान के भक्त, दिव्य शक्तियाँ हैं। उनके पूर्व भव की घटना को फरमाया। तीर्थंकरों के साथ देव शक्ति का योग होता है। अध्यात्म-जगत के अधिकृत प्रवक्ता भगवान पार्श्व थे। भगवान पार्श्व के साथ गीत-मंत्र-स्त्रोत भी जुड़े हुए हैं। उपसर्गहर स्तोत्र प्रसिद्ध हैं। स्तोत्र का उच्चारण किया। कल्याण मंदिर स्तोत्र भी भगवान पार्श्व से संबंधित है।

हम भगवान पार्श्व को याद करें। उनकी स्मृति में गुरुदेव तुलसी का रचित गीत, 'प्रभु पार्श्व देव चरणों में शत्-शत् प्रणाम हो' का सुमधुर संगान किया।

आज हम इस विद्या संस्थान में आए हैं। विद्यार्थी जीवन में नैतिकता के विकास में, शिक्षक एक निर्माता होता है। शिक्षक का जीवन ऐसा हो जिससे विद्यार्थी उनके जीवन से शिक्षा ले सके। जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों में संस्कार युक्त शिक्षा आए। ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार आएँ। विद्वता के साथ महानता भी आए। ईमानदारी, नशामुक्ति, अहिंसा भी जीवन में आए। समाज के लोग भी अपने शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा और संस्कार का विकास करने का प्रयास करते रहें, यह अभिवांछनीय है।

पूज्यप्रवर ने विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा के तीन संकल्प समझाकर स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में जैन श्वेतांबर तेरापंथी शिक्षण समिति के अध्यक्ष नरेश मेहता, महामंत्री प्रदीप डोसी, मीनाक्षी पारख ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। शास्त्री नगर एवं मिलाप भवन ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की सुंदर प्रस्तुति हुई। विद्यालय की शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों ने गीत की सुंदर प्रस्तुति दी।

आचार्यश्री के दर्शन के लिए राजस्थान के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास पहुँचे।

उन्होंने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि आज मुझे आचार्यश्री महाश्रमण जी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। **(शेष पृष्ठ २ पर)**

संतों के उपदेश जीवन में उतारने से आत्मा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं। जैसे भिक्षु कौन? अलग-अलग नय से अलग अर्थ हो सकता है। एक नय कहता है—जो भिक्षा लेता है, वह भिक्षु होता है। सात नयों में अंतिम नय कहता है कि भिक्षा करता है, इस आधार पर मैं भिक्षु नहीं रहता। वर्तमान में भिक्षा ले रहा है, वह भिक्षु है। बाकी समय में भिक्षु नहीं है एवं भूत नय का अपना मंतव्य है। साधना के समय भिक्षु नहीं है।

निर्वाण और मोक्ष में शब्दों में अंतर किया जा सकता है। दीपक का बुझ जाना निर्वाण है। मोक्ष मुक्ति से जुड़ा हुआ है। निर्वाण को वो प्राप्त कर सकता है, जिसके भीतर में धर्म है। धर्म वहाँ टिकता है, जो व्यक्ति शुद्ध होता है। शुद्धि बाह्य भी हो सकती है पर जिसका चित्त शुद्ध होता है, उसके धर्म टिकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि बाह्य शुद्धि से चित्त की शुद्धि नहीं हो सकती। भीतर की कड़वाहट स्नान करने से नहीं जाती। भीतर के पाप स्नान करने से साफ नहीं होंगे।

उपदेशों को जीवन में उतारने से आत्मा की शुद्धि हो सकती है। जल से शरीर की शुद्धि हो सकती है, पर मन की नहीं। आत्मा ही अपने आपमें एक नदी है। उसमें संयम रूपी पानी है, उस में सत्य का प्रवाह बहता है, शील उसके तट हैं। उसमें दया की भावना उसकी तरंगें हैं, इस नदी में स्नान करो तो शुद्धि हो जाएगी।

जीवन में संयम की साधना करो, सच्चाई के पथ पर चलो, शील की आराधना करो और दया की भावना रखो, उसमें डुबकियाँ लगाओ, शुद्धि हो जाएगी। गुरुदेव तुलसी अणुव्रत में बताते थे—नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन पावन हो। जो शुद्ध होता है, उसके भीतर में धर्म ठहरता है। जो ऋजु होता है, सरल होता है, उसकी शुद्धि होती है। गलती कोई हो जाए तो स्वीकार कर प्रायश्चित्त का वहन कर लो, तो शुद्धि हो सकती है।

छल-कपट, पाप को छिपाना है तो शुद्धि कैसे हो? हम ऋजुभूत रहें। गलती का परिमार्जन करें। निर्वाण का एक आधार है—ऋजुता, सरलता, उसकी साधना करो तो हम निर्वाण की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

समणी श्रद्धाप्रज्ञा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। इनके संसारपक्षीय पिताजी का कुछ समय पहले देहावसान हो गया था। पूज्यप्रवर ने उनके बारे में उद्बोधन प्रदान कर पारिवारिकजनों को संबल प्रदान करवाया। समणी श्रद्धाप्रज्ञा जी व पारिवारिकजनों में धर्म की भावना बनी रहे।

बोराज स्कूल की प्रिंसिपल गीता राधा, सरपंच सुरेंद्र सिंह मीणा, जैन समाज से पंकज जैन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

इच्छाओं पर नियंत्रण से आत्मिक और मानसिक शांति मिलती है : आचार्यश्री महाश्रमण

मणीपाल युनिवर्सिटी, ३ जनवरी, २०२२

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः मणीपाल युनिवर्सिटी परिसर में पधारे। युनिवर्सिटी के कुलपति जी०के० प्रभु ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने डिग्री प्राप्त साधु-साध्वियों का वाइस चांसलर से परिचय करवाया जिससे चांसलर गदगद हो गए और प्रभावित भी हुए कि तेरापंथ के साधु-साध्वियाँ इतने शिक्षित हैं।

महामनीषी परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के मन में इच्छाएँ भी पैदा होती हैं। इच्छाएँ अच्छी भी हो सकती हैं और अवांछनीय भी हो सकती हैं। अच्छी इच्छा है, वह सद्इच्छा है। बुरी इच्छा दुरिच्छा हो जाती है। आदमी के मन में भौतिक पदार्थों के प्रति भी आकर्षण होता है।

दो मार्ग हैं, एक आध्यात्मिकता का मार्ग और दूसरा भौतिकता का मार्ग है। दो विचारधाराएँ रही हैं। एक आस्तिक विचारधारा। दूसरी नास्तिक विचारधारा। आस्तिक विचारधारा में आध्यात्मिकता की बात आती है, नास्तिक विचारधारा में भौतिकता की बात आती है। हम आध्यात्म की इच्छा करें। वीतराग बनें, कल्याण के मार्ग पर चलें।

इच्छा अनंत हो जाती हैं। इच्छा के इस क्रम को तोड़ें, संतोष को धारण करें। संतोष का आभूषण ग्रहण करें। मोहग्रस्त मूढ़ लोग असंतोष में रहने वाले होते हैं। पंडित-अध्यात्मवेत्ता हैं, आत्मा निर्मल है, वो लोग संतोष को ग्रहण कर लेते हैं। संतोष का अंत नहीं है। जो संतोष प्राधान्य में रहता है, वह पूज्य है।

इच्छा का परिसीमन करें। गृहस्थों के लिए बारह व्रतों में दो व्रत हैं—इच्छा परिमाण और भोगोपभोग। इनकी सीमा हो। मोक्ष की साधना के लिए इच्छाओं का परिसीमन अपेक्षित है। अनिच्छ होना भी अपेक्षित है। अल्पेच्छ बन जाएँ, महेच्छ न रहें। आदमी को जैसे सुविधा मिलती है उसकी माँग और बढ़ जाती है। यह एक प्रसंग से समझाया।

आदमी ऊपर से गिरते-गिरते नीचे तक आ सकता है। इच्छा पर कंट्रोल रहे। यह आत्मिक और मानसिक शांति के लिए बढ़िया है। गृहस्थों के भी अनेक इच्छाएँ हो सकती हैं। आदमी नियम विरुद्ध अर्थार्जन न करे। नैतिकता रहे। अणुव्रत में प्रामाणिकता-नैतिकता की बात है। पैसे के उपयोग में भी सीमा रहे। सादगीपूर्ण जीवन हो। आडंबर, दिखावा न हो। दृष्टिकोण सम्यक् रहे। अनावश्यक संग्रह न हो। विसर्जन आसक्ति को छोड़ने का उपाय है।

इच्छाओं के संसार में अनिच्छा का दीप जलाएँ। इच्छाओं के अंधकार में अनिच्छा का सूर्य जलाएँ। प्रतिस्त्रोत में चलना कठिन हो सकता है। कुछ बढ़िया पाना है, तो प्रतिस्त्रोतगामी बनना पड़ता है। सुख-सुविधाओं को त्यागने का प्रयास हो।

मणिपाल यूनिवर्सिटी में आना हुआ है। ये विद्या-संस्थान ज्ञान देने के लिए है। अनेक विषयों के साथ में संस्कार की भी शिक्षा दी जाए। तो एक अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है।

हम इच्छा के अंधकार में अनिच्छा की मोमबत्ती-लाइट या अनिच्छा का महासूर्य उदित हो सके, ऐसा प्रयास करें। तो जीवन में विशेष प्राप्ति की जा सकती है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

दोपहर में विश्वविद्यालय परिसर के शारदाबाई ऑडिटोरियम में विश्वविद्यालय के कुलपति जी०के० प्रभु सहित अनेकानेक प्रध्यापक व कर्मचारीगण ने आचार्यश्री का अभिनंदन किया। आचार्यश्री के समक्ष विद्यालय परिसर का परिचय तथा कुलगीत की प्रस्तुति की गई। तत्पश्चात कुलपति जी०के० प्रभु ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा कि नववर्ष के प्रारंभ में ही महान संत आचार्यश्री महाश्रमण जी का शुभागमन से हुए सभी का जीवन धन्य हो गया। हम सौभाग्यशाली हैं तो हम सभी को आपकी अमृतवाणी का श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। आप धरती की परिधि से लगभग सवागुणा अधिक किलोमीटर की पदयात्रा कर चुके हैं। यह वंदनीय है। आपका आगमन हमारे लिए किसी उत्सव से कम नहीं है।

आचार्यश्री ने समुपस्थित जनों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि ज्ञान के समान कोई पवित्र चीज नहीं है। ज्ञान प्राप्ति के लिए विनय का भाव, गुरु के प्रति सम्मान का भाव अर्थात् प्रणम्य, विनम्र बनना, प्रश्न अर्थात् जिज्ञासा करना और नित्य सेवा करना होता है। मेरा मणिपाल विश्वविद्यालय में पहली बार आगमन हुआ है। यहाँ विद्यार्थियों का ज्ञानात्मक विकास के साथ शारीरिक विकास के साथ मानसिक विकास और भावात्मक विकास का भी प्रयास हो तो विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सकता है। सभी के सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की चेतना का भी विकास हो। आचार्यश्री के मंगल प्रवचन श्रवण के पश्चात विश्वविद्यालय से जुड़े हुए लोगों ने अपनी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत कीं। आचार्यश्री ने सभी की जिज्ञासाओं को समाहित कर पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

असफलता से सबक सीखकर निरंतर पुरुषार्थ करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

अर्बन विलेजेज, १ जनवरी, २०२२

नव वर्ष २०२२ का शुभारंभ-स्वागत और २०२१ को विदाई। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम महासूर्य शासन अधिशास्ता ने नव वर्ष के प्रथम दिन की शुभ वेला में शृंगारवेली से विहार कर अर्बन विलेजेज में मंगल पदार्पण किया। नव वर्ष का मंगलपाठ सुनने श्रावकों का ताँता लगा हुआ था।

अध्यात्म के महासूर्य ने नव वर्ष की पावन वेला में अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज सन् २०२२ का प्रारंभ हुआ है, उसके संदर्भ में मंगल पाठ आदि उच्चारित किया जा रहा है। पूज्यप्रवर ने वृहद मंगलपाठ की कृपा करवाई। लोगस्स पाठ का उच्चारण करवाया। मंत्रोच्चार करवाया। श्रावक समाज को संकल्प एक वर्ष के लिए स्वीकार करवाए।

महामनीषी ने आगे फरमाया कि पंडित शुभ पक्ष को पहचानो। हमारे जीवन में क्षेत्र और काल का बड़ा महत्त्व है। इनके बिना हम कोई कार्य नहीं कर सकते। हर कार्य के लिए समय और स्थान अपेक्षित है। जैन दर्शन में काल को भी छः द्रव्यों में एक द्रव्य माना गया है। समय का धर्म है, बीतना। समय थकता ही नहीं है, अनंत काल से मानो चलता आ रहा है, आगे भी चलता रहेगा। अनवरत गतिमान है। समय अतीत में जाता रहता है।

जैन दर्शन में समय पर वर्णन मिलता है। समय एक पारिभाषिक शब्द भी हैं, काल की लघुत्तम ईकाई का नाम समय होता है। मानो सन् २०२१ अतीत के समंदर में मिल गया है। सन् २०२२ अब वर्तमान हो गया है। २०२१ का सन् किसके लिए कैसा रहा, अपनी-अपनी अलग-अलग व्याख्या हो सकती है। क्या पाया, क्या खोया? खोना-पाना दुनिया में चलता रहता है, यह एक दृष्टांत से समझाया कि कषायों और राग-द्वेष को खोजना भी मानो पाना होता है।

जिंदगी में आदमी कभी किसी क्षेत्र में असफल भी हो सकता है, पर झटपट निराश नहीं होना चाहिए। आगे और प्रयास करो, पता नहीं कल सफलता मिल सकती है। असफलता से सबक सीखना चाहिए। भाग्य भरोसे तो आदमी को बैठना नहीं चाहिए। भाग्य भरोसे बैठे रहने वाला अभागा आदमी हो सकता है, ऐसा मेरा विचार है। पुरुषार्थ अच्छा करते रहो।

सन् २०२२ एक खंड का सहचर बना है, इस मित्र से क्या पाएँ? यह चिंतन का विषय है। करने वाला योजनाबद्ध अच्छा कार्य कर सकता है। इस वर्ष में मैं धर्म-अध्यात्म की साधना क्या करूँ? सोचा जा सकता है। आदमी एक चिंतनशील प्राणी है, वह सोचे। अचिंतन से भी कुछ नई बात नया प्रकाश दिख सकता है। चिंतन का महत्त्व है, तो अचिंतन का भी महत्त्व है। अपने प्रभु के साथ भी रहें। यह एक प्रसंग से समझाया कि प्रभु के साथ रहने वाला अभय होता है।

सन् २०२२ में Double Two अर्थात् दो, दो हैं, इनसे हम यह प्रेरणा लें कि एक टू को छोड़ना, दूसरे टू को रखना। राग-द्वेष इस टू को छोड़ने की साधना करें। सत्य और मैत्री इस टू को अपने जीवन में विकसित करने का प्रयास करें। **(शेष पृष्ठ ४ पर)**

साध्वी पद्मावती जी के प्रति काव्यात्मक उद्गार

● **मुनि चैतन्य कुमार 'अमन'** ●

जीवन धन्य बनाया।
अनशन व्रत के द्वारा संयम जीवन सफल हो पाया।।

साध्वी पद्मावती शासनश्री सचमुच थी शासनश्री।
संयम जीवन अनशन व्रत से बन गई थी शासनश्री।
एकादशम अनुशास्ता का पाया है उत्तम साया।।

चौविहार तप संलेखना कर संथारा स्वीकारा।
बढ़ते चढ़ते भावों से स्वीकारा पार उतारा।
धन्य तुम्हारी आत्मा सतीवर धन्य हो गई काया।।

साध्वी भत्तुजी साध्वी नगीनाजी की सहयोगी।
वर्षों तक उनके सह रहकर बनी रही उपयोगी।
अग्रणी बनकर वे भी तुमने किया काम सवाया।।

सेवा भावना ऋजुता मृदुता कलाकार सुखकारी।
अद्भुत मनोबली बन करके अपनी नैया तारी।
मुनि चैतन्य अनन्य भाव से अनुमोदन कर पाया।
मुनि चैतन्य 'अमन' अनुमोदन कर दिल में हरसाया।।

लय : संयममय जीवन हो---

अमृत सिंचन कार्यक्रम का आयोजन

कोयंबटूर।

अभातेममं के निर्देशानुसार असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के स्वर्ण जयंती के मनोनयन के अभिवंदना के अवसर पर अमृत सिंचन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण नीलम बैद के द्वारा हुई। अपने स्वागत भाषण में उपाध्यक्ष मोनिका लुनिया ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी अद्वितीय हैं। हमारी प्रेरणा स्रोत हैं। अभातेममं द्वारा निर्देशित सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन स्थानीय महिला मंडल ने किया।

प्रतियोगिताओं में निम्न प्रथम, द्वितीय, तृतीय इस प्रकार रहे।

भाषण प्रतियोगिता—प्रथम-दीपिका बोथरा, द्वितीय-हेमा भंसाली एवं तृतीय-सुशीला बाफना।

क्विज प्रतियोगिता—प्रथम-सीमा बोकड़िया, अपराजिता नाहटा, द्वितीय-मधु चोरड़िया, ममता सेठिया एवं तृतीय-सरिता मालू, कनकप्रभा बुच्चा।

कथानक दृश्याकन में ख्याति सेमलानी, वंदना पारेख, रूपकला भंडारी, भावना बोथरा, प्रज्ञा बैद ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के वैराग्य काल को प्रस्तुत किया।

भाषण प्रतियोगिता में प्रज्ञा बैद, गुन बोहरा ने, क्विज प्रतियोगिता में शांति मरोठी, निर्मला कांकरिया और कथानक दृश्याकन में ख्याति सेमलानी, वंदना पारेख ने अपनी जिम्मेदारी निभाई। निर्णायक टीम पूर्व अध्यक्षा मधु बांठिया और पूर्व मंत्री मीनू बोथरा रहे।

कार्यक्रम का संयोजन प्रज्ञा बैद ने किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री कनक बुच्चा ने किया। उन्होंने बताया कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी पर निबंध पत्रिका प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी समाचार के लिए कनक बुच्चा, मोनिका कोटेचा, अंग्रेजी समाचार के लिए वंदना पारेख और तमिल समाचार के लिए ललिता बरलोटा का कार्य सराहनीय रहा। स्थानीय महिला मंडल व कन्या मंडल की बहनों की सहभागिता रही।

संस्कारों से भावित हो विद्यार्थी का...

(पृष्ठ २ का शेष)

दर्शन के साथ-साथ प्रवचन सुनने का लाभ भी सहज मिल गया। मैं अपने विधानसभा क्षेत्र तथा राजस्थान सरकार व समस्त जनता की ओर से आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। परमाणु हथियारों से लैस दुनिया को आपके संदेश नया मार्ग दिखा रहे हैं। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आप ५१ हजार किलोमीटर की यात्रा करने के बाद भी जन-जन के कल्याण के निरंतर गतिमान हैं। आप जैसे पुण्यात्मा के दर्शन कर मेरा जीवन धन्य हो गया।

आचार्यश्री ने उन्हें आशीष प्रदान करते हुए कहा कि राजनीति एक सेवा का अवसर है। इसमें भी नैतिकता, ईमानदारी, स्वच्छता बनी रहे, खूब अच्छी सेवा की भावना का विकास होता रहे।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि पूज्यप्रवर की लोकोपकार की धृति लोगों को आकर्षित करती है।

✦ *जीवन को अच्छा बनाने के लिए व्यसनमुक्तता आवश्यक है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

दो पीढ़ियों का मिलन-संस्कारों का हो वपन

राजाजीनगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार राजाजीनगर कन्या मंडल ने दादी-पोती सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में दादी-पोती की १५ जोड़ियाँ उपस्थित रही।

दादियों ने अपनी पोतियों को उनके जीवन के अनुभवों से पोतियों के संस्कारों को पोषित किया एवं जीवनोपयोगी बातें बताईं। पोतियों ने अपनी दादियों को आज के जमाने के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने एवं आगे बढ़ने के लिए कहा।

महिला मंडल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष उषा चौधरी ने दादी-पोती के इस रिश्ते की व्याख्या की और अपने विचार रखे। दादियों ने अपने समय के अनुभव और उनके पोतियों के साथ व्यतीत कुछ मीठे किस्से सुनाए।

गेम के द्वारा दादी-पोती के बीच कम्यूनिकेशन गेप के बारे में महिला मंडल की सहमंत्री सुमन वेदमूथा ने समझाया। सभी दादी-पोती जोड़ियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल सहप्रभारी सरिता हीरावत ने किया।

मंगलाचरण की प्रस्तुति कन्या मंडल की बेटियों द्वारा की गई। महिला मंडल अध्यक्ष चेतना वेदमूथा ने सभी का स्वागत किया। कन्या मंडल प्रभारी सरिता संचेती ने आभार ज्ञापन किया।

दादी-पोती सेमिनार

बालोतरा।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल, बालोतरा द्वारा दादी-पोती सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल द्वारा नमस्कार महामंत्र व गीतिका द्वारा किया गया। उसके बाद महिला मंडल की अध्यक्ष निर्मला संकलेचा द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य सारिका बागरेचा ने अपने विचार व्यक्त किए।

महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा द्वारा अपनी अभिव्यक्ति दी गई। सेमिनार में १५ दादी-पोती की जोड़ियों ने सुंदर प्रस्तुति दी। दादी-पोती की दूरियों को मिटाने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिससे वह एक-दूसरे के साथ अच्छा वक्त गुजार सकें।

कार्यक्रम में महिला मंडल की उपाध्यक्ष रानी बाफना, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, पूर्व परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल, पूर्व अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, पूर्व कन्या मंडल संयोजिका विधि भंसाली, सह-संयोजिका मनीषा ओस्तवाल व कन्या मंडल की पूरी टीम उपस्थित थी। मुख्य मुनिश्री की माताश्री भी उपस्थित थी। कार्यक्रम में लगभग ८० बहनों की उपस्थिति रही। अंत में आभार ज्ञापन कन्या मंडल की प्रभारी श्वेता सालेचा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल की संयोजिका साक्षी वेद मेहता द्वारा किया गया।

नव वर्ष शुभारंभ

मदुरै।

तेरापंथ महिला मंडल एवं भारतीय जैन संघटना (बीजेएस), तमिलनाडु द्वारा अनेकता में एकता के भावों के साथ अंग्रेजी नववर्ष पर नई शुरुआत, जैन समाज एक साथ एवं Together Towards Tomorrow का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मधु पारख ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा की। अध्यक्ष नयना पारख ने सभी का स्वागत किया।

मंत्री दीपिका फूलफगर ने बीजेएस के कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी प्रदान की। साथ ही फन एंड गेम्स का भी आयोजन किया गया। बीजेएस स्टेट एग्जीक्यूटिव मेंबर सृष्टि बरड़िया का पूरा सहयोग रहा। कार्यक्रम के सफल आयोजन में दिगंबर, स्थानकवासी, मंदिरमार्गी एवं अन्य जैन समाज की महिलाओं ने अपना उत्साह दिखाया और ३० से भी अधिक महिलाओं ने लेडीज विंग में अपना नाम दर्ज कराया। उपाध्यक्ष रेखा दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया।

विकास यात्रा

ईरोड।

मुनि सुधाकर कुमार जी एवं मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया एवं उनके साथ पदाधिकारी मंजुला डूंगरवाल, शालिनी दुगड़ और सुमित्रा चौपड़ा का ईरोड पधारना हुआ। महिला मंडल अध्यक्ष सुनीता भंडारी एवं मंत्री पिंकी वेदमूथा द्वारा स्वागत-अभिनंदन किया गया। अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने कहा कि विकास यात्रा इरोड से प्रारंभ हो रही है। सभा अध्यक्ष दुलीचंद पारख एवं तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत एवं महासभा कार्यकारिणी सदस्य रमेश पटावरी ने अपने विचार व्यक्त किए।

चंदा डूंगरवाल एवं भारती डागा द्वारा नीलम सेठिया एवं उनके साथ पधारे हुए पदाधिकारियों का तिलक व माला द्वारा सम्मान और स्वागत किया गया। अंत में महिला मंडल मंत्री पिंकी वेदमूथा द्वारा धन्यवाद और आभार ज्ञापन किया गया।

रूपांतरण कार्यशाला

विजयनगर।

कषाय विषय पर कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी प्रमिला कुमारी जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ किया गया। मंजु लुनिया तथा सुनीता पींचा द्वारा भिक्षु अष्टकम का संगान किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रेरणा गीत के द्वारा किया गया।

महिला मंडल की अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए कषाय को सरल भाषा में परिभाषित करते हुए बताया कि किस प्रकार हम अनेकांत को व्यावहारिक रूप में अपनाकर एवं कषाय का अल्पीकरण कर सुखी परिवार, सुखी समाज, सुखी राष्ट्र एवं सुखी विश्व की कल्पना को साकार कर सकते हैं। प्रशिक्षिका रक्षा मांडोत ने कषाय विषय पर कहानी के माध्यम से छोटे-छोटे संकल्पों तथा उदाहरण के द्वारा समझाया।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि २५ बोल में १ बोल है आत्मा ८, इसमें कषाय आत्मा भी है। शक्ति व क्रोध दोनों की दो दिशाएँ हैं, जहाँ आवेश वहाँ शक्ति क्षीण हो जाती है, शक्ति संपन्न बनने के लिए आवेश व आवेग पर कंट्रोल रखना जरूरी है।

सहमंत्री सुनीता भटेवरा ने प्रशिक्षिका रक्षा मांडोत का परिचय दिया। प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका रेखा पितलिया के द्वारा क्रोध व कषाय नियंत्रण के लिए अनुप्रेक्षा करवाई गई। आभार ज्ञापन मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री अंजु सेठिया ने किया।

कार्यक्रम में कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया ने तेरापंथ महिला मंडल, विजयनगर की जागरूकता के लिए अपनी मंगलभावना व्यक्त की। महिला मंडल के सभी पदाधिकारी, कार्यकारिणी बहनें तथा सदस्य बहनें लगभग ७५ की संख्या में उपस्थित रहीं। कार्यशाला की प्रायोजक संतोष पारख रहीं।

दो पीढ़ियों का मिलन-संस्कारों का हो वपन

साहुकारपेट, चेन्नई।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं, चेन्नई की आयोजना में कन्या मंडल के द्वारा तेरापंथ सभा भवन, साहुकारपेट में दादी-पोती का सेमिनार आयोजित किया गया। दादी-पोती की उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा सतगुणित हो गई। सेमिनार की शुरुआत सामुहिक नमस्कार महामंत्र के द्वारा हुई। कन्या मंडल संयोजिका भवि बाफना एवं अक्षी बोहरा ने तिलक लगाकर भावभरा स्वागत किया।

कन्या मंडल से भवि बाफना, अक्षी, निवृत्ति, खुशी, योगिता ने मंगल संगान किया। तत्पश्चात प्रभु पार्श्वनाथ जयंती के अवसर पर पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति का संगान कन्या मंडल द्वारा किया गया। तेममं, चेन्नई की अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने सभी का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल की कन्याओं ने नाटिका का मंचन कर सबको आह्लादित कर दिया। इस सेमिनार को दो राउंड में विभाजित करते हुए गेम के माध्यम से दादी अपनी पोती के भावी जीवन सुखमय कैसे बने और आज के युग में जिन संस्कारों की जरूरत है, उस पर प्रकाश डालते हुए सभी दादी ने अपने विचार व्यक्त किए। पोतियों ने भी अपने दादी के भावी जीवन की मंगलकामना करते हुए दादी की सीख को शिरोधार्य किया। दादी-पोती की बेस्ट जोड़ी का खिताब प्राप्त करने वाली जोड़ी पिस्तादेवी आच्छा एवं हिमानी आच्छा और स्पेशल जोड़ी ममता बुरड़-मेहक बुरड़ रहे।

कार्यक्रम में गेम के तीन विजेता रहे। निर्णायक पुष्पा हिरण एवं रीमा सिंघवी ने पिस्तादेवी-हिमानी आच्छा को प्रथम, सूरजदेवी, लक्षिता बोहरा को द्वितीय और प्रेमाबाई-दीक्षा कोठारी एवं कोशल्या देवी-कीर्ति सेठिया को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर घोषित किया। महिला मंडल द्वारा सभी विजेताओं का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल प्रभारी प्रीति डूंगरवाल, सहप्रभारी वंदना पगारिया, कन्या मंडल संयोजिका भवि बाफना एवं इस कार्यक्रम की संयोजिका अक्षी बोहरा ने किया। मंत्री रीमा सिंघवी ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी कार्यकर्ताओं एवं दादी-पोती की जोड़ियों का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में कन्या मंडल से तेजल, कीर्ति, प्रेक्षा, श्रुति का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों की उपस्थिति रही।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000

असफलता से सबक सीखकर निरंतर...

(पृष्ठ ३ का शेष)

आगम में कहा गया है—स्वयं सत्य खोजें, सबके साथ मैत्री करें। राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। इनको छोड़ने का प्रयास करें। इस डबल टू के फार्मूले को ध्यान में रखकर प्रेरणा ली जा सकती है।

आज १-१-२०२२ है। आचार्य भिक्षु हमारे धर्मसंघ में पहले गुरु हुए थे। हमारे पूर्वाचार्यों से, तीर्थंकरों के प्राप्त संदेशों से प्रेरणा ली जा सकती है। स्वाध्याय करने का प्रयास हो। आज कई साधु-साध्वियाँ हमारे साथ हैं, पर प्रमुखाश्री जी नहीं हैं। जयपुर में होते हुए भी दूरी हो गई है। मैं उनके प्रति भी मंगलकामना करता हूँ। जल्दी मिलना हो जाए। वे भी खूब स्वस्थ रहते हुए अच्छा सेवादान-कार्य करें।

हमारे धर्मसंघ के साधु-साध्वियाँ, समणियाँ, श्रावक-श्राविकाएँ हैं, उनके प्रति भी हमारी आध्यात्मिक मंगलकामना है। पूरे विश्व के लिए मेरी मंलगकामना है। कोरोना संबंध में भी सभी में चित्त समाधि रहे। प्रतिकूलता आ जाए तो समता-शांति में रहें, यह हमारे लिए काम्य है।

मुख्य मुनिश्री, मुख्य नियोजिका जी, साध्वीवर्या जी ने भी अपनी मंगलभावना अभिव्यक्त की। अर्बन वीलेजज के दौलत डागा ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी की स्मृति सभा

गदग।

तेरापंथ भवन, गदग में डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में शासनश्री साध्वी पद्मावती जी की स्मृति सभा मनाई गई। डॉ० साध्वी गवेषणा जी ने कहा कि लक्ष्य के बिना जीवन दयनीय होता है, जो विशेष उद्देश्य के साथ जीता है उसका जीवन सुभाषित होता है। साध्वी पद्मावती जी के तप-जप की खुशबू पूरे विश्व में फैल गई, उसका कारण है उद्देश्य के साथ जीवन जीए। अपने कर्तव्य से मुझे ३८ साल तक साथ रहने का अवसर मिला। व्यक्तित्व को परखने एवं जीवन को पढ़ने का मौका मिला।

साध्वी मयंक जी ने कहा कि शासनश्री साध्वी पद्मावती जी सहज-सरल स्वभाव की थी। आराधक पद के लक्ष्य थे। आप अपने ग्रुप में पयमिश्री ज्यो घुले-मिले रहे। जीवन के संध्याकाल में अतुल पराक्रम और साहस से संथारा स्वीकार करके समाज के सामने कीर्तिमान स्थापित किया।

साध्वी मेरूप्रभा जी ने कहा कि साध्वी पद्मावती जी और मेरी जोड़ी थी। बहुत से काम मुझे उन्होंने सिखाए, मेरी माँ तुल्य थे। साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। डॉ० साध्वी गवेषणा जी ने कहा कि पूरे देश भर से काफी संघीय साधु-साध्वियों के संथारा अनुमोदना में संदेश एवं गीतिकाएँ हमें प्राप्त हुई, उन सबके प्रति कृतज्ञता एवं आभार व्यक्त करते हैं।

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि आलोक कुमार जी, मुनि प्रबोध कुमार जी, मुनि जिनेश कुमार जी, शासनश्री साध्वी सूरजकुमारी जी, शासनश्री साध्वी जिनप्रभा जी, शासन गौरव दादरी राजीव भतीजी, शासनश्री साध्वी कनकरेखा जी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी पवनप्रभा जी, साध्वी आत्मयशा जी, साध्वी उर्मिला कुमारी जी, साध्वी मृदुला जी, साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी, साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी, साध्वी जिनप्रभा जी, साध्वी प्रबलयशा जी, साध्वी चरितार्थप्रभा जी के प्रति कृतज्ञता एवं आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों के मंगलाचरण से हुई। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी ने स्वागत भाषण दिया। तेरापंथ महासभा के प्रभारी रमेश चोपड़ा, तेरापंथ सभा के मंत्री गौतम चोपड़ा, तेरापंथ महासभा के प्रभारी ऋषभ गेलड़ा, तेयुप अध्यक्ष दिनेश संकलेचा, मंत्री कमलेश जीरावला सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। मूर्तिपूजक समाज से मनोज बाफना, वैष्णव समाज के दीपचंद परमार ने अपने भाव व्यक्त किए। जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ श्री जैन स्थानकवासी संघ सीडीओ जैन संघ, वैष्णव समाज गुजराती पटेल समाज, जैन युवा संगठन, जैन स्थानकवासी नवयुवक मंडल, जैन स्थानकवासी महिला मंडल, श्री जैन स्थानकवासी बहू मंडल, सुलसा केसर बहू मंडल, वीर बालिका मंडल, श्री जैन एकता मंच, जैन सोशल ग्रुप महावीर जैन समिति—इन सभी संस्थाओं का संथारा काल में अतुल्य सेवा के लिए मोमेंटो द्वारा सम्मान किया गया। संचालन जितेंद्र जीरावला व सुरेश कोठारी ने किया।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी की स्मृति सभा

हैदराबाद।

साध्वी निर्वाणश्री जी की सन्निधि में शासनश्री पद्मावती जी की स्मृति सभा आयोजित की गई। जिन मंदिर के विशाल सभागार में उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि शासनश्री पद्मावती जी एक पुण्यवान साध्वी थी। उन्होंने शाहदा के गेलड़ा परिवार व संचेती परिवार का गौरव बढ़ाया है। उन्होंने अपनी कर्मभूमि महाराष्ट्र में दीक्षा ग्रहण की, महाराष्ट्र में ही अग्रणी बनी और अब दक्षिण धरा गदग में अनशनपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हो गई। उनका सहज-सरल स्वभाव सदैव याद रहेगा।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने शासनश्री के गुणानुवाद करते हुए कहा कि वे एक शांत प्रकृति की व्यवहार कुशल साध्वी थी। वर्षों तक साध्वी भत्तुजी के सान्निध्य में रहीं। उनके दिवंगत होने के पश्चात साध्वी नगीनाजी के उपपात में रहीं। करीब ६४ वर्षों तक एक साथ मिलनसारिता से रहना, एक उपलब्धि थी।

साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी तथा साध्वी मधुरप्रभा जी ने समवेत स्वरों में गीत से सभागार को संगीतमय बना दिया। तेरापंथी सभा, सोलापुर की ओर से प्रेक्षा प्रशिक्षक डॉ० शांतिलाल सेठिया ने उनका गुणानुवाद किया। तेरापंथ सभा, तेयुप व उपासक राजेश छाजेड़ आदि ने अपने भाव प्रकट किए।

✦ *भावक्रिया, प्रतिक्रियाविरति, मैत्री, मिताहार, मितभाषण— प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा के ये पाँच सूत्र जीवन में आ जाते हैं तो स्वस्थ जीवनशैली के महत्त्वपूर्ण सूत्र हस्तगत हो जाते हैं।*

— आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

हुलासचंद बैद के सुपुत्र एवं पुत्र-वधू प्रवीण-कार्निका बैद की नवजात पुत्री रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में अभातेयुप संस्कारक कन्हैयालाल बोथरा, भारत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक नामकरण संस्कार करवाया। कार्यक्रम में किशोर मंडल, गंगाशहर से रौनक चोरड़िया सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

संस्कारकों द्वारा बैद परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित की गई। इस अवसर पर समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

पाणिग्रहण संस्कार

पूर्वांचल-कोलकाता।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी मोहनलाल सिंघी की सुपुत्री नेहा सिंघी का शुभ पाणिग्रहण संस्कार राजसमंद निवासी, मुंबई प्रवासी स्व० प्यारचंद लोढ़ा के सुपुत्र राकेश लोढ़ा से जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक सुरेंद्र सेठिया व सह-संस्कारक सुमेरमल बैद ने संपन्न करवाया।

मोहनलाल सिंघी एवं कमलेश लोढ़ा ने परिषद व संस्कारकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। अभातेयुप के पूर्व सहमंत्री सुभाष सिंघी ने अभातेयुप की तरफ से एवं परिवार की तरफ से सभी का आभार ज्ञापन किया।

नामकरण संस्कार

जयपुर।

संजू देवी-राजकुमार संचेती के संपुत्र गोविंदराम संचेती के सुपौत्र एवं कमल दुधेड़िया के दोहिते का नामकरण संस्कार संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने विधि-विधानपूर्वक जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

तेयुप कार्यसमिति सदस्य सुमित चोरड़िया सहित समाज के अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में परिषद की ओर से मंगलभावना पत्र भेंट किया गया।

विवाह संस्कार

जयपुर।

स्व० नोरंगलाल बोथरा के सुपुत्र मिलन कुमार बोथरा का विवाह संस्कार रणजीत कुमार बुच्चा की सुपुत्री रिंची जैन के साथ जयपुर में संपन्न करवाया।

तेयुप द्वारा वर-वधू एवं दोनों पक्षों से लिखित में पंजीकृत प्रमाण-पत्र पर उनकी सहमति ली गई तद्उपरांत संस्कारक राजेंद्र बांठिया, सहयोगी संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने विवाह को संपूर्ण विधि से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में जैन संस्कार विधि के संयोजक बिनीत सुराणा, कार्यसमिति सदस्य गर्वित कोचर की उपस्थिति में मंगलभवना पत्रक तेयुप, जयपुर की तरफ से दोनों परिवारों को भेंट किया गया।

पाणिग्रहण संस्कार

सूरत।

बीकानेर निवासी, सूरत प्रवासी चंद्रकांता नाहटा के सुपुत्र विकास नाहटा का शुभ पाणिग्रहण संस्कार बीकानेर निवासी, सूरत प्रवासी राजेंद्र लोढ़ा की सुपुत्री निधि लोढ़ा के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा ने संपूर्ण विधि से संपन्न करवाया।

चंद्रकांत व राजेंद्र ने संस्कारकों व उपस्थित सभी परिजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत के पूर्व कोषाध्यक्ष शुभकरण बोथरा ने शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए मंगलभावना यंत्र भेंट किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

पदराड़ा निवासी, सूरत प्रवासी ख्यालीलाल जैन के सुपुत्र जैकी जैन के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक गौतमचंद वैदमूथा, मनीष कुमार मालू व हिम्मत बम्ब ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

ख्यालीलाल, जैकी व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व सभी पारिवारिक जनों का अभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत द्वारा मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

पर्वत पाटिया।

कनाना निवासी, पर्वत पाटिया प्रवासी संदीप कुमार व जसोल निवासी पर्वत पाटिया प्रवासी नीरजकुमार मालू के संयुक्त नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक गौतम वेदमूथा एवं रवि मालू ने जैन संस्कार विधि द्वारा संपन्न करवाया।

परिवारजनों ने संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में तेयुप के पदाधिकारीगण उपस्थित थे। तेयुप उपाध्यक्ष-प्रथम प्रदीप पुगलिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। परिषद की तरफ से मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

✦ *व्यक्ति जिस कार्य में संलग्न हो, उसमें तल्लीन होना व एकाग्र होना भावक्रिया है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

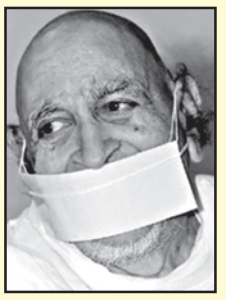

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

दीर्घश्वास की साधना

प्रश्न : श्वास-प्रेक्षा का स्वरूप क्या है और उससे क्या परिणाम आ सकता है?

उत्तर : हमारे अंतर्भावों को नापने में श्वास की संख्या मानदंड बनती है। मुख्यतः श्वास की तीन अवस्थाएँ हैं–सहज श्वास, मंद श्वास और छोटा श्वास। सहज श्वास सब लोग लेते हैं। मैं श्वास ले रहा हूँ, यह बोध किसी को हो या नहीं, श्वास सबको लेना पड़ता है। श्वास प्राणी का जीवन है। थोड़ी देर के लिए भी श्वास लेना बंद कर दिया जाए तो घुटन हो जाती है। जीने के लिए रोटी और पानी जितने आवश्यक नहीं हैं, उतना आवश्यक है–श्वास। सामान्यतः एक मिनट में सोलह या सतरह श्वास आते हैं। श्वास को देखना शुरू कर दिया जाए तो उसकी गति अपने आप मंद होने लगती है। एक मिनट में सतरह श्वास की संख्या घटकर बारह-तेरह श्वास तक पहुँच जाती है। श्वास के साथ चित्त का योग होने पर संख्या और घटती है और वह दस तक पहुँच जाती है। थोड़ी और गहराई में प्रवेश करने पर एक मिनट में पाँच-छह श्वास आते हैं। चित्त की एकाग्रता बढ़ने के साथ-साथ संख्या कम होती रहेगी और वह एक श्वास तक भी पहुँच सकती है। एक मिनट में एक श्वास की स्थिति सफलता की सूचना है। इस स्थिति में साधक अपने समग्र अस्तित्व को श्वास के साथ अनुभव करता है। उस समय वह स्वयं श्वासमय बन जाता है। श्वास के आगमन और निर्गमन का एक भी क्रम बोध-शून्यता की स्थिति में नहीं होता। जागरूकता के साथ श्वास लेना और उतनी ही जागरूकता के साथ छोड़ना अर्थात् चित्त को श्वास और श्वसन-केंद्र में स्थापित कर एकाग्र बन जाना और श्वास को सहज भाव से दीर्घ करते रहना, प्राथमिक रूप से यह श्वास-प्रेक्षा है।

श्वास-प्रेक्षा का पहला परिणाम है–मानसिक एकाग्रता। इसका दूसरा लाभ है–मनस्तोष। प्राण शक्ति की प्रबलता और सक्रियता भी इससे होती है। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात है आत्मविश्वास का जागरण। आत्मविश्वास के लिए प्राण-शक्ति की प्रचुरता और सक्रियता अपेक्षित है, जो श्वास की मंदता पर निर्भर है। श्वास जैसे-जैसे मंद होता है, वैसे-वैसे गहरा होता जाता है। गहरे श्वास से एक वलय बनता है, जो ध्यान के क्षेत्र में आगे बढ़ने वालों के लिए बहुत आवश्यक है।

छोटा श्वास शारीरिक और मानसिक अस्थिरता का सूचक है। श्वास जितना छोटा होगा, गति उतनी ही तेज होगी। ऐसे श्वास एक मिनट में पचास-साठ तक आ जाते हैं। बीमारी, चढ़ाई और विशेष आवेगों की स्थिति में ऐसा ही होता है। उत्तेजना के समय एक मिनट में लगभग चालीस श्वास आने लगते हैं। वासना के आवेग में यह संख्या साठ-सत्तर तक पहुँच जाती है।

प्रश्न : श्वास के साथ आयुष्य का भी कोई संबंध है क्या?

उत्तर : प्रत्यक्ष रूप से श्वास के साथ आयुष्य का कोई संबंध नहीं है पर आयुष्य के पुद्गलों को भोगने में श्वास निमित्त बनता है। इस दृष्टि से परोक्षतः श्वास के साथ उसका संबंध माना जा सकता है। श्वास छोटे होंगे तो आयुष्य के पुद्गलों की अधिक अपेक्षा रहेगी। श्वास मंद होंगे तो पुद्गलों की खपत कम होगी। हर प्राणी को आयुष्य के पुद्गल तो उतने ही भोगने पड़ते हैं, जितने पुद्गलों का उसने बंधन किया है। खपत की कमी और अधिकता के आधार पर काल कम और अधिक हो जाता है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति एक महीने की भोजन सामग्री संगृहीत करता है। भोजन का अनुपात बराबर रहता है तो वह सामग्री एक मास तक काम में आ जाती है। किंतु बीच में ही मेहमान आ जाएँ और अतिरिक्त भोजन तैयार करना पड़े तो वह सामग्री एक महीने से कम समय में पूरी हो जाती है। ठीक यही स्थिति आयुष्य के पुद्गलों की है। खपत बढ़ने से कम समय में आयुष्य के अधिक पुद्गलों का भोग हो सकता है।

प्रश्न : योग के आचार्यों ने प्राणायाम को भी उतना ही मूल्य दिया है, जितना ध्यान को। प्रेक्षाध्यान साधना में प्राणायाम का कोई स्थान है या नहीं?

उत्तर : श्वास-प्रेक्षा का एक चरण श्वास-संयम भी है। श्वास-संयम एक प्रकार का प्राणायाम ही है। प्राणायाम के तीन अंग हैं–पूरक, रेचक और कुंभक। कुंभक में श्वास को रोका जाता है और श्वास-संयम में उसे मंद करते-करते निरोध की स्थिति तक पहुँचा जाता है। मानसिक शांति के लिए तथा विचारों के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण उपाय है। किंतु यह जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही खतरनाक भी है। इसलिए प्रारंभिक अभ्यास में पाँच-सात सेकंड से अधिक श्वास संयम नहीं करना चाहिए। जिस साधक को इतनी भी सुविधा न हो, वह इस क्रम को छोड़ भी दे। हठपूर्वक श्वास-संयम का प्रयोग कभी नहीं होना चाहिए। ऐसा प्रयोग कोई करना चाहे तो उसके लिए विशेषज्ञ का निर्देशन बहुत आवश्यक है।

श्वास एक छोटा-सा उपाय है, किंतु है इतना महत्त्वपूर्ण कि इसको जाने बिना प्रेक्षाध्यान का अभ्यास नहीं हो सकता और इसके प्रयोग के बिना एकाग्रता या निर्विकल्पता की स्थिति उपलब्ध नहीं हो सकती। अंतश्चेतना के संस्पर्श के लिए, एकाग्रता तथा मानसिक शांति को विकसित करने के लिए एक रहस्य और ज्ञातव्य है, वह है लयबद्ध श्वास।

प्रश्न : लयबद्ध श्वास क्या होता है?

उत्तर : जैसे संगीत में लयबद्धता होती है, वैसे श्वास में भी लयबद्धता रहती है। जिस श्वास को लेते समय चार मात्रा जितना समय लगता है, रोककर रखने में चार मात्रा जितना समय लगता है और छोड़ने में भी चार मात्रा जितना समय लगता है, वह श्वास लयबद्ध या संगीतात्मक श्वास कहलाता है। कोई व्यक्ति बीस मिनट तक प्रति मिनट इसका प्रयोग करे तो ध्यान की सहज स्थिति निर्मित हो जाती है। इसके बाद ध्यान के लिए बहुत बड़ी साधना करने की अपेक्षा नहीं रहती है। यह एक छोटा-सा उपक्रम है किंतु ध्यान का विकास करने के लिए अमोघ उपक्रम है, इस बात को कभी भी नहीं भूलना चाहिए।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(४८)

सत्य को साकार करना जानते हो
बनाना उसको कहो फिर श्रव्य कैसा?

नहीं सदियों तक पहुँच होगी मनुज की
कर परिश्रम तुम पहुँच पाए जहाँ पर
तरणि की उजली किरण हो सामने जब
तिमिर का साम्राज्य टिकता है कहाँ पर
ज्योति बनकर तुम स्वयं उतरे धरा पर
अब तमस के हरण का मंतव्य कैसा?

अचिंतन से विशद चिंतन दे रहे तुम
इसलिए एकांत में परितोष पाते
साधता सान्निध्य यदि कोई तुम्हारा
गहन दर्शन की उसे बातें सुनाते
मूकता प्रेरक रही उपदेश से बढ़
फिर बताओ सत्य का वक्तव्य कैसा?

चरण ये गतिशील रहते हैं तुम्हारे
ठहरना अभिशाप ऐसा मानते हो।
रूढ़ता को मोड़ देने क्रांति करते
कला जीने की सिखाना जानते हो।
जलधि की हर लहर से गतिमान हो जब
आत्मकेंद्रित साधना गंतव्य कैसा?

विश्व मानव को सदा सद्बोध देने
चीर बाधाएँ स्वयं चलते रहे हो।
तिमिर हरने का सफल सपना बनाने
दीप बनकर रात-दिन जलते रहे हो।
जब स्वयं पौरुष तुम्हारा निखरता है
फिर बताओ नियति या भवितव्य कैसा?

(४९)

सज रहे हैं आज घर-घर नए वंदनवार।
पुलक भरता ही रहे हर वर्ष यह त्योहार।।

फूल बनकर खिल रहे तुम बाँटते मुस्कान
दीप बनकर जल उठे तो तिमिर अंतर्धान
कल्पना की मधुरिमा तुम गीत की झंकार।।

जन्म का उत्सव मनाएँ पा नई पहचान
पौध सपनों की फली है मुखर मंगल गान
एक सुधि अनजान सपनों में जगी सुकुमार।।

खोलकर अभिनव क्षितिज तुम दो नया आयाम
विश्व मानव की बने ज्यों जिंदगी अभिराम
छा गया उल्लास सबमें पा तुम्हें साकार।।

अभय का वरदान दे दो भीति को कर दूर
स्वप्न को सच में बदलने शक्ति दो भरपूर
पर्व हो आराधना के सिद्धि के तुम द्वार।।

(क्रमशः)

संबोधि

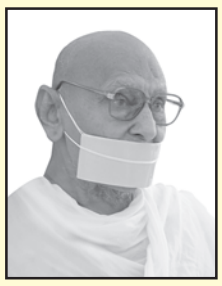

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(क्रमशः) आसक्ति ही व्यक्ति को दुःखी बनाती है। वह आसक्ति चेतन पदार्थ के प्रति हो या अचेतन के प्रति। वर्तमान युग इसका ज्वलंत उदाहरण है। तनाव समस्या सर्जन करता है। तनाव विविध रोग उत्पन्न करता है। इसका समाधान अनासक्ति है। भोग के साथ जो प्रियता-अप्रियता का योग बनता है, उससे ही अपनी चेतना को दूर रखना है। इसका प्रयोग है–संयम तथा तप। चेतना को अलग रखना तपस्या है। यह कठिन नहीं, किंतु अभ्यास साध्य होती है। अनासक्त रहने का संकल्प ही धीरे-धीरे भावना को पुष्ट करता है और जागृति को सशक्त बनाता है। उसकी परिणति चेतना की अनुभूति में होती है। उसके बाद अनासक्ति स्वतः सिद्ध हो जाती है। एक चेतना की आसक्ति अन्य समस्त आसक्तियों को उखाड़ फेंकती है। गीता, भगवान आदि में जहाँ अनन्यचेता की बात कही है वही बात चेतना की अनुभूति की है। चेतना की अनुभूति अनासक्ति बढ़ाती है, अनासक्ति से भावधारा निर्मल होती है। मन प्रसन्न होता है और आनंद की धारा सहज ही प्रस्फुटित हो जाती है।

धर्म क्यों अनिवार्य है?

धर्म की प्रासंगिकता सदैव अपरिहार्य रही है। धर्म है तो व्यवस्था है, धर्म है तो स्वच्छता है। यह स्वर हमारे कानों में सदा टकराता रहा है कि **'धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।'** धर्म से हीन जीवन पशु तुल्य है। अध्यात्म दृष्टि से धर्म की उपादेयता असंदिग्ध है तो व्यवहार दृष्टि से भी असंदिग्ध है। धर्म चेतना को रूपांतरित करता है। व्यक्ति की भावधारा को बदलता है, व्यक्ति का कर्म विशुद्ध बनता है। उसका अंतःकरण निर्मल बन जाता है। उसके प्रत्येक कर्म में धर्म की झलक प्रतीत होने लगती है। सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, वैयक्तिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। धर्म उन सब पर नियंत्रण करता है। एक धार्मिक व्यक्ति कभी अनैतिक, अप्रामाणिक, भ्रष्ट आचरण वाला, दूसरों का शोषण करने वाला, दूसरों को दुःख देने वाला, असत्य, मायावी, हिंसक, क्रूरकर्मा नहीं हो सकता है। इस दृष्टि से धर्म की अनिवार्यता को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। धर्म होगा तो मानव-मानव के मध्य न खाई होगी, न घृणा और न ऊँच-नीच का भाव होगा।

धर्म का क्या लाभ है?

धर्म का मौलिक लाभ है–आत्मशांति। सभी संतों, ऋषियों, अर्हतों ने शांति के लिए अपना जीवन समर्पित किया था, शास्त्रों की संरचना भी शांति के लिए है। वह जिसमें है, उसे किसी बाह्य पदार्थ की अपेक्षा नहीं है। धर्म का उद्देश्य बाह्य पदार्थों की पूर्ति करना नहीं है। वह तो स्वभाव को उजागर करता है। शांति स्वभाव है। चेतना का धर्म है। इसलिए कहा है–

या देवी सर्वभूतेषु, शांतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

जो समस्त प्राणियों के भीतर शांति के रूप में संस्थित है मैं उस परम शक्ति को नमन करता हूँ। अन्य लाभ हो या न हो उससे कोई अंतर नहीं पड़ता। बाह्य लाभ के न होने पर भी एक शांत व्यक्ति के हृदय में कोई अंतर नहीं पड़ता।

धर्म का बाह्य लाभ भी प्रत्यक्ष है। एक धार्मिक व्यक्ति तनाव से दूर रहता है, तनाव जनित, कषायजनित व्याधियाँ उसे ग्रस्त नहीं करतीं। वह सतत संतुलित जीवन जीता है। सामान्य व्यक्ति 'लाभ' शब्द के द्वारा केवल वस्तुनिष्ठ लाभ को ही महत्त्व देता है। उसकी दृष्टि वहीं केंद्रित होती है किंतु यह धर्म का मौलिक ध्येय नहीं है।

इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे
आज्ञावादनामा सप्तमोऽध्यायः।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-२०: अनेक भवों की दृष्टि से जीव कितनी बार चारित्र को प्राप्त कर सकता है?

उत्तर : मोक्षगमन से पूर्व सभी चारित्र वाले जीव जघन्य दो बार, उत्कृष्ट सामायिक ७२००, छेदोपस्थापनीय ६६०, परिहास विशुद्धि ७, सूक्ष्म संपराय ६ व यथाख्यात वाले ५ बार उसी चारित्र को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न-२१: चारित्र की स्थिति कितनी है?

उत्तर : एक भव में पाँचों चारित्र की जधन्य स्थिति एक समय, उत्कृष्ट सामायिक, छेदोपस्थापनीय व यथाख्यात की कुछ कम करोड़ पूर्व, परिहार विशुद्धि की उनतीस वर्ष न्यून करोड़ पूर्व तथा सूक्ष्म संपराय की अंतर्मुहूर्त्त है।

अनेक व्यक्तियों की अपेक्षा से सामायिक व यथाख्यात की सर्वकाल, छेदोपस्थापनीय की जधन्य कुछ अधिक अढ़ाई सौ वर्ष उत्कृष्ट कुछ अधिक पचास लाख करोड़ सागर, परिहार विशुद्धि की जधन्य कुछ कम २०० वर्ष उत्कृष्ट कुछ कम दो करोड़ पूर्व, सूक्ष्म संपराय की जधन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त स्थिति है।

प्रश्न-२२: चारित्र का उत्थान व पतन कहाँ होता है?

उत्तर : सामायिक चारित्र का उत्थान होने पर छेदोपस्थापनीय व सूक्ष्म संपराय चारित्र को प्राप्त होते हैं। छेदोपस्थापनीय वाले परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय; सूक्ष्म संपराय वाले यथाख्यात व यथाख्यात वाले उत्थान होने पर मोक्ष को प्राप्त होते हैं। परिहार विशुद्धि का उत्थान होता नहीं। पतन व (परिवर्तन) होने पर सामायिक वाले असंयति व श्रावकत्व को प्राप्त होते हैं। छेदोपस्थापनीय वाले सामायिक, संयतासंयति, असंयतित्व को; परिहार विशुद्धि वाले छेदोपस्थापनीय व असंयतित्व को; सूक्ष्म संपराय वाले सामायिक, छेदोपस्थापनीय व असंयतित्व को; यथाख्यात वाले सूक्ष्म संपराय व असंयतित्व को प्राप्त करते हैं। **(क्रमशः)**

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य कुंदकुंद

आचार्य कुंदकुंद का दिगंबर परंपरा में गरिमामय स्थान है। अध्यात्म दृष्टियों को विशेष उजागर करने का श्रेय उन्हें प्राप्त है। श्रुतधर आचार्यों की परंपरा में भी उनको प्रमुख माना गया है। आचार्य कुंदकुंद के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण उनकी उत्तरवर्ती परंपरा मूल संघ और कुंदकुंदाचार्य की परंपरा कहलाने में गौरव अनुभव करती है। श्वेतांबर परंपरा में जो महत्त्व पूर्वधर आचार्य स्थूलभद्र को दिया गया, वही महत्त्व दिगंबर परंपरा में आचार्य कुंदकुंद को मिला है। जैन धर्म का सुप्रसिद्ध एक ही श्लोक श्वेतांबर परंपरा में आचार्य स्थूलभद्र के नाम के साथ और दिगंबर परंपरा में आचार्य कुंदकुंद के नाम के साथ स्मरण किया जाता है। वह श्लोक इस प्रकार है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः।
मंगलं कुंदकुंदाद्या (स्थलूभद्राद्या) जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।

तीर्थंकर महावीर और गणधर गौतम के बाद दिगंबर परंपरा में आचार्य कुंदकुंद का उल्लेख उनकी महनीय महत्ता का परिचायक है।

आचार्य कुंदकुंद की गुरु-परंपरा के संबंध में सर्वसम्मत एक विचार प्राप्त नहीं है। बोध प्राभृत के अनुसार आचार्य कुंदकुंद भद्रबाहु के शिष्य थे। पर भद्रबाहु उनके साक्षात् गुरु नहीं थे। कुंदकुंद-ग्रंथों के टीकाकार आचार्य जयसेन के अभिमत से आचार्य कुंदकुंद कुमारनंदी सिद्धांतदेव के शिष्य थे। शुभचंद्र गुर्वावली में प्राप्त उल्लेखानुसार भद्रबाहु के शिष्य माघनंदी, माघनंदी के शिष्य जिनचंद्र, जिनचंद्र के शिष्य पद्मनंदी का ही दूसरा नाम कुंदकुंद था। नंदी-पट्टावली में भद्रबाहु द्वितीय, गुप्तिगुप्त, माघनंदी जिनचंद्र के बाद कुंदकुंद का उल्लेख किया है। इन दोनों पट्टावलियों में प्राप्त उल्लेखानुसार आचार्य कुंदकुद के गुरु आचार्य जिनचंद्र थे, दादागुरु माघनंदी थे। आचार्य कुंदकुद ने श्रुतधर भद्रबाहु को अपना गमक गुरु माना है।

आचार्य कुंदकुंद दक्षिण भारत के निवासी एवं वैश्यवंशज थे। उनका जन्म दक्षिण भारत के अंतर्गत कौण्डकुंदपुर में हुआ। कुंदकुंद के पिता का नाम करमंडू और माता का नाम श्रीमती था। कौंण्डकुंदपुर निवासी करमंडू को दीर्घ प्रतीक्षा के बाद एक तपस्वी ऋषि की कृपा से पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई थी। करमंडू का यह पुत्र जन्म-स्थान के आधार पर कुंदकुंद के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जन्म-स्थान का नाम कोण्डकुंद है, उच्चारण-मधुरता के कारण कोण्डकुंद ही कुंदकुंद नाम से परिवर्तित हुआ।

आचार्य कुंदकुंद उग्रविहारी थे। वे दुर्गम घाटियों और वनों में भी निर्भीक भाव से विहरण करते थे। उनके पास तप का तेज और साधना का बल था। उनका चिंतन अध्यात्मप्रधान था। कुंदकुद के पाँच नाम बताए गए हैं–(१) पद्मनंदी, (२) कुंदकुंद, (३) वक्रगीव, (४) एकल (एलाचार्य), (५) गृद्धपिच्छ।

कुंदकुंद को तीव्र तपश्चरण के परिणामस्वरूप चारणलब्धि प्राप्त थी।

दर्शनसार में प्राप्त उल्लेखानुसार आचार्य कुंदकुंद को महाविदेह में सीमंधर स्वामी से ज्ञानोपलब्धि हुई थी। आचार्य कुंदकुंद वास्तव में अध्यात्म-दृष्टियों के प्रमुख व्याख्याकार थे। उनकी वाणी ने अध्यात्म के नए क्षितिज का उद्घाटन किया और आगमिक तत्त्वों को तर्क-सुसंगत परिधान दिया।

उनकी दृष्टि में भावशून्य क्रियाएँ सर्वथा निष्फल थीं। इन्हीं विचारों की अभिव्यक्ति में उनका एक श्लोक है–

भावरहिओ ण सिज्झई, जइवि तवं चरई कोडिकोडीओ।
जम्मंतराइं बहुसो लंबियहत्थो गलियवत्थो।।

जीव दोनों हाथ लटकाकर और वस्त्र त्यागकर करोड़ जन्म तक तपश्चर्या करता रहे पर भाव-शून्यावस्था में उसे कभी सिद्धि प्राप्त नहीं होती।

समय-संकेत

आचार्य कुंदकुंद के समय के विषय में सभी दिगंबर विद्वान् एकमत नहीं हैं। पं० नाथूराम प्रेमी ने कुंदकुंद का समय वि० की तृतीय शताब्दी का उत्तरांश स्वीकार किया है। डॉ० पाठक ने कुंदकुंद का समय शक संवत् ४५०, ईस्वी सन् ५२८ सिद्ध किया है। डॉ० उपाध्याय ने ई० सन् प्रथम शताब्दी को मान्य किया है। डॉ० ज्योति प्रसाद जैन ने भी कुंदकुंद के लिए ई० सन् प्रथम शताब्दी को प्रमाणित किया है।

कुंदकुद के ग्रंथों में केवली-कवलाहार, सचेलकता, स्त्री-मुक्ति आदि श्वेतांबर मान्यताओं का निरसन है। अतः कुंदकुद का समय दिगंबर और श्वेतांबर संघ की स्थापना हो जाने के बाद का अनुमानित होता है।

कुंदकुंद के ग्रंथों में दार्शनिक रूप की जो विवेचना है वह उमास्वाति के तत्त्वार्थाधिगम में नहीं है। सप्तभंगी का रूप भी आचार्य कुंदकुंद के ग्रंथों में अधिक विकसित है। उत्तरवर्ती दार्शनिक धाराओं में भी कुंदकुद के ग्रंथों में उपलब्ध सप्तभंगी का रूप आधार बना है। अतः इन बिंदुओं के आधार पर आचार्य कुंदकुद वाचक उमास्वाति के बाद के विद्वान् हैं।

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने लिखा है–

'कुंदकुंद की अमर भारती, आत्मा का अतिशय आलोक।
समयसार की समयसारणी, निश्चय नय का फलद अशोक।।

(व्यवहार बोध ८४)

(क्रमशः)

✦ *आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

प्रभु पार्श्व जन्म कल्याणक महोत्सव के विविध आयोजन

उपसर्गहर स्तोत्र अनुष्ठान

गुवाहाटी।

साध्वी संगीतश्री जी एवं उनकी सहवर्तिनी साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी व साध्वी मुदिताश्री जी के सान्निध्य में एवं तेरापंथी सभा के द्वारा स्थानीय तेरापंथ धर्मसंघ में भगवान पार्श्वनाथ जयंती के उपलक्ष्य पर भव्य रूप से उपसर्गहर स्तोत्र अनुष्ठान का आयोजन किया गया। इस अनुष्ठान में काफी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने सजोड़े भाग लिया। इसके अलावा कुछ श्रावक-श्राविकाओं ने अकेले भी भाग लिया।

साध्वी संगीतश्री जी ने कहा कि पौष कृष्ण दशमी तिथि को भगवान पार्श्वनाथ की जयंती मनाई जाती है। भगवान पार्श्वनाथ २३वें तीर्थंकर थे। पार्श्वनाथ वास्तव में ऐतिहासिक व्यक्ति थे।

इस अनुष्ठान में तेरापंथी सभा अध्यक्ष झनकार दुधोड़िया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष शांतिलाल कुंडलिया, उपाध्यक्ष दिलीप दुगड़, मंत्री निर्मल सामसुखा, कोषाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा आदि पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों के अलावा तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप, अणुव्रत समिति, टीपीएफ, आचार्य तुलसी महाश्रमण रिसर्च फाउंडेशन आदि संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, सदस्यों तथा श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

प्रभु पार्श्व प्रणति

ईरोड।

२३वें तीर्थंकर प्रभु पार्श्व देव के जन्म कल्याणक के अवसर पर मुनि सुधाकर कुमार जी एवं मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में उपसर्गहर स्तोत्र भगवान पार्श्वनाथ के प्रभावी मंत्रों का महानुष्ठान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। अभातेयुप द्वारा निर्देशित यह कार्यक्रम सभा भवन में आयोजित हुआ।

मुनि नरेश कुमार जी ने मधुर संगीत द्वारा और मुनि सुधाकर कुमार जी ने चौबीसी एवं पारसनाथ भगवान के संगान द्वारा पावन पाथेय प्रदान किया। इस अनुष्ठान का हमें जप, साधना और सिद्धि का सर्वोत्तम अवसर मिला। श्रावकों की अच्छी उपस्थिति रही। वानियामबाड़ी, गुड़ियातम और त्रिपुर के श्रावक भी उपस्थित रहे।

ज्ञानपूर्वक की गई क्रिया कल्याणकारी है

राजाजीनगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में भगवान पार्श्व जन्म कल्याणक महोत्सव का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा मंत्रोच्चार से प्रारंभ हुआ। साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि भारत की ऐतिहासिक धरा वाराणसी में माता वामादेवी महारानी की कुक्षि से १४ दिव्य स्वप्नों के साथ राजकुमार पार्श्व का आज के दिन जन्म हुआ। सहस्त्रों वर्षों पूर्व की यह घटना गरिमामय दस्तावेज है।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि तीर्थंकरों का जन्म त्याग, तप, संयम के साथ नई जीवनशैली प्रतिष्ठित करता है। उनकी माता रत्न कुक्षि धारिणी कहलाती है। साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी, साध्वी चेलनाश्री जी ने पार्श्व प्रभु की स्तुति में श्रद्धा पूरित गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बबीता चोपड़ा ने बड़ी संख्या में समागत जनमेदिनी के स्वागत में विचार रखे।

राजाजीनगर तेरापंथ सभा अध्यक्ष शांतिलाल पितलिया, महावीर मांडोत, सुशील मांडोत, उत्तम गन्ना, पद्मा चोपड़ा आदि उपस्थित थे। मनोहर लाल चावत ने बेले तप का प्रत्याख्यान किए। अनेक भाई-बहनों ने उपवास एकासन, चरम प्रत्याख्यान स्वीकार किए। साध्वीश्री जी ने कार्यक्रम के पूर्व उपसर्गहर स्तोत्र तथा विशेष मंत्र जपानुष्ठान करवाया।

भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणोत्सव

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणोत्सव के उपलक्ष्य में पार्श्वनाथ स्तुति का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। बीज मंत्र एवं उपसर्गहर स्तोत्रम का जाप किया गया। चौबसी में पार्श्वनाथ की गीतिका का संगान किया गया।

संरक्षिका चंद्रकांता कोठारी ने संगान किया। बबिता लोढ़ा ने सुमधुर गीतिका के द्वारा प्रभु पार्श्वनाथ का गुणगान किया। अध्यक्ष नयना पारख ने सभी को अग्रिम कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की एवं त्याग-तप की प्रेरणा दी।

प्रभु पार्श्व प्रणति

अहमदाबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा प्रभु पार्श्वनाथ के जन्मकल्याणक पर प्रभु पार्श्व प्रणति कार्यक्रम मनाया गया। परिषद के प्रबंधन मंडल के साथ अधिकाधिक कार्यसमिति सदस्यों ने मिल १५१ से अधिक उपवास किए।

प्रभु पार्श्व प्रणति को सफल बनाने में संयोजक रोहित संकलेचा, जय छाजेड़, भावेश हिरण एवं सह-संयोजक कुशल चोरड़िया, नैतिक पारीख, विनय बाफना की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

भगवान पार्श्व देव जन्म कल्याणक

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी-द्वितीय के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक दिवस महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल कालबादेवी में मनाया गया। इस अवसर पर तप एवं जप का विशेष अनुष्ठान किया गया। कई भाई-बहनों ने यथाशक्ति उपवास, एकासन, प्रहरसी आयंबिल आदि तप किए। आचार्य तुलसी द्वारा रचित गीत का सभी ने सामुहिक संगान किया।

साध्वी प्रियंवदा जी एवं साध्वी प्रेरणाश्री जी ने स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण की प्रेरणा दी। साध्वी विद्यावती जी ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ जैन जगत के २३वें तीर्थंकर थे। वे वाराणसी नगरी के महाराजा अश्वसेन एवं महारानी वामादेवी के पुत्र थे। दीक्षित होकर भगवान पार्श्व ने जन-जन को आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस अनुष्ठान में दक्षिण मुंबई का पूरा श्रावक समाज अच्छी संख्या में उपस्थित रहा।

भगवान पार्श्वनाथ एक क्रांतिकारी युगपुरुष थे

चंडीगढ़।

भगवान पार्श्वनाथ जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर माने जाते हैं, जिन्होंने अज्ञान-अंधकार-आडंबर एवं क्रियाकांड के माध्यम से क्रांति का बीज बनकर पृथ्वी पर जन्म लिया था। भगवान पार्श्वनाथ बचपन से ही चिंतनशील और दयालु स्वभाव के थे। वे सभी विद्याओं में प्रवीण थे। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने समय की हिंसक स्थितियों को नियंत्रित कर समाज में अहिंसा का प्रकाश फैलाया। भगवान पार्श्वनाथ ने जैन दर्शन के रूप में शाश्वत सत्यों का उद्घाटन किया। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने सभा को संबोधित करते हुए कहे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि भगवान पार्श्वनाथ एक क्रांतिकारी युगपुरुष थे, उनकी क्रांति का अर्थ रक्तपात नहीं। क्रांति का अर्थ है परिवर्तन। क्रांति का अर्थ जागृति। क्रांति अर्थात् स्वस्थ विचारों की ज्योति। क्रांति का अर्थ आग नहीं, क्रांति का अर्थ है सत्य की ओर अभियान। उनका अंत से इति तक का पूरा सफल पुरुषार्थ एवं धर्म की प्रेरणा है। वे सम्राट से संन्यासी बने, वर्षों तक दीर्घ तप तपा, कर्म निर्जरा की, तीर्थंकर बने। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व जैन इतिहास का एक अमिट आलेख बन चुका है।

भगवान पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस

पुरी।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में भगवान पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस तप-जप व गुणोत्कीर्तन के द्वारा मनाया गया। पुरी स्थित संपतराज रांका के जिज्ञाशा स्थल तथा गोल्डन बीच पर उपस्थितों को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान पार्श्व जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर थे। उनका जन्म वाराणसी में राजा अश्वसेन के पुत्र के रूप में हुआ। वे क्रांतिकारी थे। उन्होंने अज्ञान तप अंधविश्वास कुरूढ़ियों पर जबर्दस्त प्रहार किए। उन्होंने दीक्षा स्वीकार कर साधना से केवल ज्ञान प्राप्त किया।

इस अवसर पर पहले मुनि जिनेश कुमार जी आदि मुनिश्री द्वारा भगवान पार्श्व का जाप और स्तुतियों का संगान किया गया। इस अवसर पर पुरी व भुवनेश्वर के स्थिति संध्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। सुभाष भूरा ने मुनिवृंदों का स्वागत करते हुए पार्श्व जयंती पर आयोजित तपोयज्ञ के बारे में बताया।

प्रभु पार्श्व प्रणति तपोयज्ञ में किए उपवास

चलथान।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप ने जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याणक के अवसर पर प्रभु पार्श्व प्रणति कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

तेरापंथ समाज के युवा इस दिन तपस्या व पौषध से इस दिवस को मनाते हैं। परिषद अध्यक्ष ज्ञान दुगड़ ने बताया कि प्रभु पार्श्व प्रणति पर तप की प्रेरणा जगाने के लिए परिषद ने घर-घर जाकर युवा साथियों को इस तप फेस्टिवल से जुड़ने का आह्वान किया। प्रभु पार्श्व प्रणति के माध्यम से चलथान परिषद के संपूर्ण प्रबंधक मंडल के साथ कुल ३३ युवकों ने उपवास किए। परिषद मंत्री दीपक खाब्या ने बताया कि युवकों के आध्यात्मिक विकास हेतु संस्था समय-समय पर ऐसे कार्य आगे भी करती रहेगी।

पुरुषादानी पुरुषोत्तम पार्श्वनाथ

कुंभकोणम।

२३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक का आयोजन मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में एमपी रेजिडेंसी कुंभकोणम में मनाया गया। आराध्य देव की स्तुति करते हुए मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ का पावन नाम चिंतामणि रत्न समान कामित फलदाता है, कल्पवृक्ष के समान सुख-संपत्ति का विस्तार करने वाला है और तीर्थ के समान आत्मा को शुद्ध-बुद्ध बना जन्म-मरण का संताप मिटाने वाला है।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ का जाप, मिटाता भव संताप, नहीं रहता कोई ताप, कट जाते हैं सारे पाप। बाल संत मुनि जयदीप कुमार जी ने भगवान पार्श्व पर गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल ने सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी। उपस्थित जन-समुदाय ने पार्श्वनाथ की स्तुति में जप-तप से स्तवना की। धर्मीचंद छल्लाणी ने कार्यक्रम की जानकारी दी।

प्रभु पार्श्व नाथ प्रणति तपोयज्ञ

गंगाशहर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, गंगाशहर ने जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान के जन्मकल्याणक के अवसर पर प्रभु पार्श्व प्रणति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने बताया कि पूरे देश व नेपाल बड़ी संख्या में युवकों और किशोरों ने उपवास व पौषध किए।

अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने अपने विचार व्यक्त किए एवं प्रभु पार्श्व प्रणति कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़ ने बताया कि गंगाशहर परिषद के युवकों व किशोरों के द्वारा कुल २५ उपवास हुए। परिषद मंत्री देवेंद्र डागा ने संस्था के कार्यों के बारे में जानकारी दी।

नशामुक्ति पर नुक्कड़ नाटक

कोटा।

नशा मुक्ति पर अणुव्रत समिति, कोटा के तत्त्वावधान में तेयुप ने कोटा के विभिन्न स्थानों पर नुक्कड़ नाटक का संचालन किया और नशामुक्त संकल्प प्रपत्र भी भरवाए। नुक्कड़ नाटक में ज्यादातर तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल के बच्चों ने भाग लिया।

कोटा में सात जगह नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति हुई। तेयुप, कोटा ने १६१५ नशामुक्ति संकल्प प्रपत्र भरवाए।

शपथ ग्रहण समारोह एवं मेधावी छात्रों को पुरस्कार वितरण

राजसमंद।

तुलसी साधना शिखर पर प्रबुद्ध संत मुनि संजय कुमार जी, मुनि प्रकाश कुमार जी, मुनि धैर्य कुमार जी एवं मुनि सिद्धप्रज्ञ जी के सान्निध्य में टीपीएफ का शपथ ग्रहण समारोह एवं मेधावी छात्रों को पुरस्कार वितरण किया गया। मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि हमें अपना लक्ष्य ऊँचा बनाना चाहिए। बुद्धि के साथ-साथ समझ का भी विकास जरूरी है। शिक्षा के साथ संस्कार जरूरी है, अच्छे संतों की संगत से संस्कार प्राप्त होते हैं।

मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ एक संगठित और मर्यादित धर्मसंघ है। इसमें सर्वांगीण विकास की पूरी संभावना रहती है। टीपीएफ के द्वारा प्रतिभाओं का विकास और सम्मान होना जरूरी है।

मुनि धैर्य कुमार जी ने कहा कि जब तक जीवन में संस्कार नहीं आते तब तक ऊपर की शिक्षा ज्यादा उपयोगी नहीं बनती। शिक्षा और संस्कार में दूरी नहीं होनी चाहिए।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि किसी भी कार्य के निष्पत्ति में मेन पॉवर, मनी पॉवर, मोरल पॉवन एवं मैनेजमेंट पॉवर का होना जरूरी है। कार्य की सफलता के लिए समय का नियोजन, कार्य का विभाजन व्यक्ति का संयोजन एवं शक्ति का संवर्धन होना चाहिए। टीपीएफ इस दिशा में सकारात्मक कदम उठा रहा है। विनोद बोहरा ने टीपीएफ को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण सेवाएँ दी हैं।

इस अवसर पर टीपीएफ के विनोद बोहरा ने अपने वक्तव्य में कहा कि टीपीएफ के माध्यम से मुझे सेवा करने का मौका मिला है। आप सबका पूर्ण सहयोग मिलेगा, ऐसी मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है। मैं निश्चित ही अपने इस नए कार्यकाल में सफल होऊँगा।

नवीन चोरड़िया ने टीपीएफ की विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि टीपीएफ जैन धर्म में अपनी एक पहचान बना रहा है। इस अवसर पर कार्यक्रम का मंगलाचरण मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने किया। सोनू जैन एवं प्रिया जैन ने टीपीएफ सॉन्ग का मधुर संगान किया। आर०के० जैन ने आभार ज्ञापन किया।

इस अवसर पर राजसमंद जिले से समागत अनेक मेधावी छात्र-छात्राओं को टीपीएफ के द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, कांकरोली के अध्यक्ष प्रकाश सोनी, तेयुप के अध्यक्ष धनेंद्र मेहता, राजसमंद बोधि स्थल के अध्यक्ष ख्यालीलाल चपलोत, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा डॉ० सीमा कावड़िया, महावीर मंच के अध्यक्ष सुशील बड़ाला, सुमन बड़ाला, रेखा सोनी, सुनील कोठारी, डॉ० नीना कावड़िया आदि वरिष्ठजन उपस्थित थे।

रिश्तो की डोर ना हो कमजोर

रायपुर।

रायपुर के शैलेंद्र नगर स्थित समता मुकीम भवन में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में 'रिश्तों की डोर, ना हो कमजोर' विषयक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी सभा, तेममं, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि विधायक कुलदीप जुनेजा एवं मुख्य वक्ता निखिल अग्रवाल थे।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में रिश्तों का बहुत महत्त्व है, उसमें भी दंपति का और ज्यादा। परिवार के लिए दंपत्ति एक संपत्ति है। दाम्पत्य जीवन में खुशहाली के लिए फाइव टी को अपनाना चाहिए। ट्रस्ट, टाइम, टॉकिंग, थैंक्स, टॉलरेंस। यह पाँच टी दंपत्ति के लिए महत्त्वपूर्ण सूत्र बन सकते हैं।

बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि जहाँ एक-दूसरे को सहन करना जानते वहाँ रिश्ते कमजोर नहीं पड़ते।

मुख्य वक्ता ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। सभा अध्यक्ष सुरेंद्र चोरड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा सरिता सेठिया, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने विचार रखे। तेममं मंत्री नेहा जैन ने अतिथियों का परिचय दिया।

संचालन रश्मि लुंकड़ ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री सूर्य प्रकाश बैद ने किया।

आध्यात्मिक संगम दो धाराओं का

यावली (मोहोल), महाराष्ट्र।

साध्वी निर्वाणश्री जी एवं आचार्यश्री शिवमुनि की सुशिष्या साध्वी डॉ० प्रतिभाश्री का मोहोल में मिलन हुआ। जैन धर्म संप्रदाय की दो धाराओं का विहार यात्रा में सोलापुर-पुणे राजमार्ग पर संगम सौहार्द की सुवास लेकर आया।

हैदराबाद में चातुर्मास संपन्न कर पुणे की ओर द्रुतगति से गतिमान साध्वी निर्वाणश्री जी के आगम की सूचना पाकर साध्वी डॉ० प्रतिभाश्री जी अपनी सहवर्ती साध्वी श्रद्धाश्री जी, साध्वी सर्वज्ञाश्री जी, साध्वी परिज्ञाश्री जी, साध्वी प्रणिधि आदि के साथ राष्ट्रीय महामार्ग पर पहुँच गई। एक-दूसरे को आमने-सामने पाकर यात्रा की सुखपृच्छा सह-अभिवादन कर ग्यारह ही साध्वियाँ प्रमुदित हो गईं।

एक-दूसरों की यात्रा की मंगलकामना कर साध्वियाँ अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थित हो गईं। साध्वी निर्वाणश्री जी १२:५ किलोमीटर का विहार कर यावली पहुँचीं। जहाँ चौधरी परिवार ने साध्वीश्री जी का भावभरा स्वागत किया। शिवाराम चौधरी के आवास में साध्वीश्री जी की कमला चौधरी, ममता चौधरी आदि ने अगवानी की।

अनेकांतवाद व कषाय विषयक कार्यशाला

बारडोली।

तेरापंथ भवन में अनेकांतवाद व कषाय विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण एवं प्रेरणा गीत के संगान के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की अध्यक्षा संगीता सरणोत ने स्वागत वक्तव्य दिया। अनेकांतवाद व कषाय विषय पर मंडल की बहनों द्वारा अपने विचार रखे गए एवं दृष्टांत के द्वारा समझाया कि कैसे एक ही बात को विभिन्न दृष्टिकोण से देखकर सभी की बात को सही समझा जा सकता है। क्रोध, मान, माया और लोभ रूपी कषायों से कैसे जीता जा सकता है।

३ नाटिकाओं की भी रोचक प्रस्तुतियाँ महिला मंडल द्वारा की गई। दोनों विषयों पर सामुहिक गीतिका का संगान किया एवं मुक्तक के द्वारा भी प्रस्तुति हुई। आगामी कार्यक्रमों की जानकारी भी दी गई व आभार ज्ञापन सहमंत्री उषा बड़ोला द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन दिव्या सिंघवी ने किया। कन्या मंडल की २ बहनों ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में ५० बहनों की उपस्थिति रही।

मानवता के सजग प्रहरी आचार्यश्री तुलसी का दीक्षा दिवस

भीलवाड़ा।

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी, मुनि राजकुमार जी, मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य में जयाचार्य भवन में आचार्यश्री तुलसी का ६६वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। शासनश्री मुनि हर्षलाल जी ने आचार्यश्री तुलसी का स्मरण करते हुए कहा कि वे एक तेजस्वी आचार्य थे। उन्होंने वि०सं० १९८२ में ११ वर्ष की लघुवय में अपनी बहन लाडांजी के साथ अष्टम् आचार्य कालुगणी से संयम जीवन स्वीकार किया। २२ वर्ष की अवस्था में आचार्य बनकर उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ का चहुँदिशा में विकास किया। उनका व्यक्तित्व आकर्षक था। ऐसे साधना संपन्न आचार्यश्री तुलसी के गुणों के बारे में जितना कहा जाए कम है।

मुनि राजकुमार जी ने तुलसी को समर्पित गीत का संगान करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त अवदानों की गूँज वर्षों-वर्षों तक इस धरती पर गुंजायमान होती रहेगी। वे एक अनुशासन व व्यवस्थाप्रिय आचर्य थे।

मुनि कुलदीप कुमार जी ने आचार्यश्री तुलसी का पुण्य स्मरण किया और दीक्षा के समय का तात्कालीन घटना प्रसंग बताते हुए कहा कि आचार्यश्री तुलसी को कालूगणी ने गढ़ा और श्री तुलसी ने धर्मसंघ को अनेक विशेषताओं से भरा। आचार्यश्री तुलसी ने जो जीवन जीया वो सबके लिए प्रेरणा बन गया।

कार्यक्रम के संयोजकीय वक्तव्य देते हुए मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने युग को अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे अनगिनत अवदान दिए जो आज भी पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं।

नीचकेता मुनि अनुशासन कुमार जी ने आचार्यश्री तुलसी के कर्तृत्व को व्याख्यायित करते हुए गीत का सुमधुर संगान किया। खुशी चोरड़िया ने तुलसी अष्टकम द्वारा कार्यक्रम का मंगलाचरण किया। बाल गायक दक्ष बड़ोला ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

स्वागत-अभिनंदन समारोह

नोखा।

तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादित, अनुशासित, संगठित धर्मसंघ है। आचार्य की आज्ञा सर्वोपरि है। संयम का पालन करते हुए पर-कल्याण करें, आवश्यक है। आचार्यश्री महाश्रमण जी के दर्शनार्थ बढ़ रही साध्वी अमितप्रभा जी के नोखा आगमन पर शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने उद्गार व्यक्त किए। सभा अध्यक्ष हनुमानमल ललवानी, तेरापंथ सभा मंत्री इंदरचंद बैद, उपासक अनुराग बैद, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु बैद, पूर्व मंत्री लाभचंद छाजेड़, तेयुप के मनोज घीया ने साध्वी अमितप्रभा जी के पदार्पण पर अभिनंदन भाव रखे। साध्वीश्री जी को गुण समर्पित, श्रमशील बताया।

वर्धापन गीत साध्वी कुसुमप्रभा जी, साध्वी पुलकितयशा जी, साध्वी प्रभातप्रभा जी ने गाया। साध्वी अमितप्रभा जी ने साध्वी राजीमती जी को ध्यान, योग की साधिका, परम उपकारी व गुणों का भंडार बताया।

साध्वी कंचनबाला आदि साध्वियों ने शासन गौरव के दर्शन कर मनोभाव गीतिका में प्रगट किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कुसुमप्रभा जी ने किया।

हेल्थ परीक्षण शिविर

लिलुआ।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के विशेष मंगलपाठ के द्वारा हेल्थ परीक्षण शिविर का कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में लगभग १५५ श्रावक-श्राविकाओं ने इस सुविधा का लाभ लिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल पधारे और प्रोत्साहन हेतु तेयुप, लिलुआ को साधुवाद दिया।

कार्यक्रम में विशिष्ट श्रावकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, विशेष आभार बुधमल लुनिया, तेजकरण बोथरा, वीरेंद्र सुचंती, अनिल जैन, रंजीत सेठिया, पुखराज बैद, महेंद्र खूराना, महेंद्र गुप्ता आप सबके प्रति तेयुप, लिलुआ की ओर से आभार।

सहयोगी संस्था डॉक्टर निखिल पश्तून संस्था और मेडिक्यू क्लिनिक एंड डायग्नोस्टिक एवं निःशुल्क स्थान उपलब्ध कराने हेतु संकट मोचन हनुमान मंदिर कमेटी और संदीप सिंह मुणोत का एवं कार्यक्रम को सफल बनाने एवं सहयोग हेतु तेयुप, लिलुआ के सभी युवकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन दीपक बागरेचा और संदीप दुधोड़िया के प्रति भी आभार प्रकट किया।

✦ *विद्यार्थी ज्ञान के साथ सदाचार के संस्कारों को भी अर्जित करने का प्रयास करते रहें।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

नि:शुल्क स्वास्थ्य, चर्म रोग एवं दाँतों की जाँच शिविर

सूरत।

तेयुप, सूरत द्वारा संचालित आचार्य महाप्रज्ञ चिकित्सालय में नि:शुल्क सामान्य स्वास्थ्य जाँच, चर्म रोग एवं दाँतों की जाँच के शिविर का आयोजन परमार्थ फाउंडेशन के द्वारा किया गया। शिविर में २६ जरूरतमंद लोगों ने स्वास्थ्य जाँच का लाभ लिया। जाँच में चर्मरोग विशेषज्ञ डॉ० सोनल जैन, जनरल फिजिशियन डॉ० विशाल गोयल एवं डॉ० रोहित मेहता, डेंटिस्ट डॉ० दिव्यांगना गुप्ता एवं डॉ० रीमा छोवाला ने अपनी सेवाएँ दी।

शिविर के समय परमार्थ फाउंडेशन के फाउंडर कोमल बचकानीवाला तथा उनके साथी, तेयुप, सूरत के अध्यक्ष गौतम बाफना, पदाधिकारी, एएमसी मुख्य संयोजक, संयोजक एवं कार्यकर्ता की उपस्थिति रही। तेयुप, सूरत मंत्री अभिनंदन गादिया ने परमार्थ फाउंडेशन की टीम तथा मरीजों का आभार व्यक्त किया और आगे रक्तदान, नेत्रदान तथा चिकित्सा क्षेत्र में सहयोग देने का आश्वासन दिया।

नि:शुल्क रक्त जाँच शिविर का आयोजन

सूरत।

प्रज्ञा युवा मंच और तेयुप, सूरत द्वारा आयोजित नि:शुल्क रक्त जाँच शिविर में आचार्य महाप्रज्ञ चिकित्सालय द्वारा १०० लोगों की रक्त जाँच की गई। रक्त की जाँच आचार्य महाप्रज्ञ चिकित्सालय एटीडीसी द्वारा की गई। कैंप में नि:शुल्क ब्लड शुगर, कोलेस्ट्रॉल/क्रीयेटीन की जाँच की गई।

कैंप के सफल आयोजन में प्रज्ञा युवा मंच के अध्यक्ष दीपक मेहता और उनकी टीम ने सेवा दी। कैंप स्थल पर तेयुप, सूरत के मंत्री अभिनंदन गादिया, उपाध्यक्ष अमित सेठिया, पदाधिकारी एवं एएमसी मुख्य संयोजक और संयोजक भी उपस्थित रहे। रक्त जाँच शिविर के आयोजन और संचालन में मनीष परमार का विशेष सहयोग रहा। आभार के साथ प्रज्ञा युवा मंच द्वारा तेयुप, सूरत के पदाधिकारियों का सम्मान किया गया।

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

तेयुप द्वारा क्षेत्र के भारत सेवा संघ आश्रम में वर्तिता बैद के प्रथम जन्मदिन पर बैद परिवार के सहयोग से सेवा कार्य किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद ने सामूहिक मंगलाचरण के साथ किया। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया। आश्रम के लगभग २० बच्चों को सुबह का नाश्ता, मिठाई, चॉकलेट, पाठ्य-सामग्री का वितरण परिषद के युवाओं एवं पारिवारिकजनों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष मनीष कुमार बैद, मंत्री गगन दीप बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी, संगठन मंत्री सुमित कुमार बैद, सामाजिक कार्य के संयोजक समित कुमार बैद, सह-संयोजक दीपक नखत सहित रोहित बैद की उपस्थिति रही।

परिवार से माता संगीता बैद ने परिषद के कार्यों की सराहना की और आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार सामाजिक कार्यों के संयोजक दीपक नखत ने किया।

जोड़ों के चेकअप कैंप का आयोजन

रायपुर।

अभातेयुप के महनीय उपक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर व डेंटल केयर, रायपुर में तेयुप द्वारा जोड़ चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविख्यात अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉक्टर धीरज मरोठी एवं टीम मेंबर डॉक्टर सिद्धार्थ कुमार परामर्शक हेतु उपस्थित हुए।

इस कैंप का लाभ १८ लाभार्थियों ने उठाते हुए एटीडीसी की अन्य सेवा योजनाओं का भी लाभ लेने के लिए ही कैंप की सराहना की। कैंप में एटीडीसी में कार्यरत सदस्यों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। कैंप में तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा की उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पर्वत पाटिया।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा मॉडर्न टाउन रीजेंसी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से शिविर की शुरुआत की गई। शिविर में १०५ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर को सफल बनाने में मॉडर्न टाउन रीजेंसी के तेयुप कार्यकर्ता धीरज बैद, राहुल बैद, निशांत सेठिया, पवन बाफना, श्रेयांस बुच्चा, ललित छाजेड़, अरिहंत सिंघी, प्रकाश सिंघी, दिवाकर आदि कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा। मॉडर्न टाउन रीजेंसी की महिला मंडल की बहनों ने भी शिविर को सफल बनाने में अपने श्रम का नियोजन किया एवं रक्तदान करने में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया।

इस अवसर पर एमबीडीडी के राष्ट्रीय सहप्रभारी सौरभ पटावरी, सीपीएस के राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी, सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, मंत्री भगवती परमार, उपाध्यक्ष मदन कोठारी, तेयुप परामर्शक अनिल चौधरी, तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। शिविर के प्रायोजक शांतिलाल, अनिल, अंकित चौधरी रहे। सरदार वल्लभभाई ब्लड बैंक ने अपनी सेवा प्रदान की। शिविर की आयोजना में पर्यवेक्षक प्रदीप पुगलिया, संयोजक, प्रशांत महनोत, पंकज बुच्चा का विशेष सहयोग रहा।

सार-संभाल यात्रा

अहमदाबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा सार-संभाल यात्रा का आगाज कार्यसमिति सदस्य दीपक संचेती के निवास स्थान से किया गया। तेयुप अध्यक्ष ललित बेगवानी ने सार-संभाल यात्रा को संबोधित करते हुए तेयुप सदस्यों की भूमिका की सराहना की।

इस अवसर पर अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया, अभातेयुप सदस्य राजेश चौपड़ा, एटीडीसी संयोजक अशोक बागरेचा, प्रकाश भरसारिया सहित तेयुप पूर्वाध्यक्ष, परामर्शकगण, पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री कपिल पोखरना ने किया। तेयुप संगठन मंत्री विशाल भरसारिया ने सार-संभाल यात्रा के बारे में जानकारी दी। कार्यसमिति सदस्य दीपक संचेती ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का शुभारंभ

विजयनगर।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित त्रिआयामी लक्ष्यों के अंतर्गत सेवा-संस्कार और संगठन के तहत तेयुप, विजयनगर द्वारा तेरापंथ भवन में कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। यह कार्यशाला ७ दिन तक चलेगी। इस कार्यशाला में लगभग ३० प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

कार्यशाला का शुभारंभ सर्वप्रथम सामुहिक नवकार मंत्र के मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात विजय स्वर संगम की टीम ने विजय गीत का संगान किया। स्वागत की कड़ी में तेयुप के अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वागत करते हुए अपनी मंगलकामनाएँ प्रेषित की और मंच को सूरत से पधारी हुई प्रशिक्षिका मनीषा सेठिया को आगे के प्रशिक्षण हेतु सुपुर्द कर दिया।

कार्यक्रम में मंत्री विकास बांठिया, संगठन मंत्री दीपक भूरा, सीपीएस संयोजक गौरव चोपड़ा, सह-संयोजक दिनेश मेहता, कार्यकारिणी सदस्य कुलदीप बागरेचा, विमल पारेख आदि उपस्थित थे।

फिट युवा- हिट युवा के विविध आयोजन

कृष्णानगर, दिल्ली

तेयुप, दिल्ली द्वारा गांधीनगर-कृष्णानगर क्षेत्र में आयोजित 'फिट युवा-हिट युवा' के अंतर्गत योग कार्यशाला कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में रखा गया।

नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यकर्ताओं ने विजय गीत का संगान किया। तेयुप अध्यक्ष विकास बोथरा ने पधारे हुए सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत किया। इस कार्यक्रम को सविता जैन ने संपादित किया। अभातेयुप सदस्य जतन श्यामसुखा, तेयुप मंत्री सौरभ आंचलिया, तेयुप संगठन मंत्री मयंक दुगड़, गांधीनगर सभा के उपाध्यक्ष दिनेश डूंगरवाल, संगठन मंत्री धनेश डूंगरवाल, तेयुप एवं किशोर मंडल के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन हेतु क्षेत्रीय संयोजक गौरव मनोत सहित अनेक कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री अशोक सिंघी ने किया एवं आभार ज्ञापन सह-संयोजक अंकित बोथरा ने किया।

चलथान

अभातेयुप का आयाम फिट युवा-हिट युवा के तहत तेयुप, चलथान ने आरोग्य केंद्र चलथान के साथ मिलकर गुजरात सरकार द्वारा निर्देशित गुजरात साइक्लोथॉन इवेंट का आयोजन रखा गया, जिसमें तकरीबन २५ सदस्यों ने भाग लिया। चलथान गाँव नवनिर्वाचित सरपंच महेंद्र देसाई द्वारा हरी झंडी दिखाकर इस इवेंट की शुरुआत की गई।

तेरापंथ भवन से लेकर आरोग्य केंद्र, प्रिंस होटल, नहर वाले रास्ते होते हुए तलोदरा स्थित प्राथमिक आरोग्य केंद्र पहुँचे। वहाँ से अंतिम पड़ाव मोहिनी गाँव स्थित तालाब तक साइकिल मेराथॉन का आयोजन किया गया। लगभग २ घंटे की इस मेराथॉन में २५ सदस्यों द्वारा ११ किलोमीटर साइकिल चलाई गई। तेयुप अध्यक्ष ज्ञान दुगड़ ने इस आयोजन की सराहना करते हुए सभी साथियों का आभार प्रकट किया। इस आयोजन में आरोग्य केंद्र से मुकेश, भरत वंशी एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों के साथ तेयुप मंत्री दीपक खाब्या, फिट युवा-हिट युवा प्रभारी विकेश दक, मीत दक, भाविक बाबेल, निर्मल दक, मनीष मारू, अमृत पितलिया, प्रिंस डांगी भी उपस्थित थे।

सूरत

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, सूरत द्वारा आयोजित हिट युवा-फिट युवा के अंतर्गत फिटनेस ट्रेनर डॉक्टर राज शेट्टी के फिटनेस स्टूडियो पर कार्यक्रम की शुरुआत हुई। डॉ० राज शेट्टी, सूरत के प्रतिष्ठित फिटनेस ट्रेनर हैं, उन्होंने परिषद के सदस्यों को फिटनेस टिप्स के साथ फ्लोर एक्सरसाइज भी करवाई एवं हमें किस प्रकार बैठना चाहिए, जिससे हमारे कमर और घुटनों में तकलीफ न हो उसके बारे में बताया। डॉ० राज शेट्टी द्वारा सभी युवाओं को आह्वान किया कि वह हो सके उतना जंक फूड का उपयोग ना करें।

इस कार्यशाला में तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना, सहमंत्री दीपक चोरड़िया, सचेतक प्रकाश घोड़ावत, एएमसी मुख्य संयोजक मनीष परमार, निशांत बैद के साथ कार्यकारिणी सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री अभिनंदन गादिया ने डॉ० राज शेट्टी का आभार व्यक्त किया और परिषद द्वारा उनका सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजन में हिट युवा-फिट युवा की टीम के साथ अरविंद बैद का विशेष सहयोग रहा।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

कांदिवली।

तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला के बच्चों के लिए प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन एवं तेयुप, कांदिवली द्वारा संचालित स्वास्थ्य केंद्र कांदिवली के इस सफलतम शिविर में कांदिवली, बोरिवली, मलाड एवं गोरेगाँव में संचालित ज्ञानशालाओं के ६५ से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ के मार्गदर्शन में सायरा बैद एवं सुश्री अवनी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान पारसमल दुगड़, शांतिलाल कोठारी एवं सौरभ जैन द्वारा जैन संस्कार विधि से बच्चों के जन्मदिन का उत्साह भी बनाया गया। कार्यक्रम में श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष के०एल० परमार, कोषाध्यक्ष मोहन डागा, तेयुप, कांदिवली के अध्यक्ष मनीष रांका, सहमंत्री पंकज कच्छारा एवं प्रेक्षाध्यान स्वास्थ्य केंद्र के संयोजक प्रमोद डांगी, गौतम डोसी, प्रतिमा पिंचा, राजेश बैद, अशोक कोठारी आदि की उपस्थिति रही।

विशाल रक्तदान शिविर में १३०० यूनिट रक्त संग्रह

जयपुर।

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नामित विश्व की सर्वाधिक रक्तदाता संस्था अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर के द्वारा आयोजित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव अभियान के अंतर्गत रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में दो दिवसीय सीतापुरा स्थित लोढ़ा इम्पेक्स में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ प्रमुख समाजसेवी दलपत लोढ़ा व तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ के द्वारा किया गया।

परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने बताया कि रक्त संग्रहण में भगवान महावीर कैंसर हॉस्पीटल ब्लड बैंक, स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक, संतोकबा दुर्लब जी हॉस्पीटल ब्लड बैंक, जीवनदाता ब्लड बैंक, महात्मा गांधी हॉस्पीटल ब्लड बैंक, इंटरनल हार्ट केयर हॉस्पीटल ब्लड बैंक, एसएमएस हॉस्पीटल ब्लड बैंक व एसएमएस हॉस्पीटल ब्लड बैंक ट्रोमा की सेवाओं के साथ मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव के राष्ट्रीय संयोजक हितेश भांडिया, मुख्य संयोजक दीपक भंसाली, सह-संयोजक प्रवीण भूतोड़िया व वरुण बरड़िया सहित अनेकों कार्यकर्ताओं का श्रम बहुत ही उल्लेखनीय रहा। रक्तदान शिविर मे जेसी एंटीक्स, माम आर्ट्स, अमन एक्सपोर्ट, गुप्ता, मोनू कंपनी के सहयोग से कुल १३०० यूनिट रक्तदान हुआ।

शिविर में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, पदाधिकारीगण व कार्यसमिति सदस्यों ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने कहा कि वर्तमान समय में रक्त की जरूरत होने पर जयपुर परिषद के द्वारा विभिन्न ब्लड बैंकों में रक्त का संग्रहण मानवता की सेवा में बहुआयामी सिद्ध होगा।

परिषद के मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि परिषद के कार्यकर्ता मानव कल्याण की गतिविधियों में सेवा के लिए हर पल तैयार रहते हैं। अभी कोरोना व मौसमी बीमारियों के दरमियान जब भी किसी सदस्य को प्लाज्मा व रक्त की तत्काल जरूरत हुई, तब परिषद का कार्यकर्ता रक्तदान करने के लिए अग्रिम पंक्ति में खड़ा नजर आया है। रक्तदान के प्रति स्वैच्छिक जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से वृहद् स्तर पर रक्तदान शिविरों का आयोजन करवाया जा रहा है।

अभिनंदन समारोह एवं कवि सम्मेलन

जयपुर।

तेयुप, जयपुर द्वारा मालवीय नगर स्थित अणुविभा, जयपुर केंद्र में अभिनंदन समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ व उनकी टीम के सदस्यों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा व अभातेयुप परिवार से पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए अभिनंदन किया।

परिषद के मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि इस सम्मेलन में कवि हिमांशु बवंडर, कवि चिराग जैन एवं कवि सुनील व्यास, सभी कवियों ने अपनी-अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने कहा कि रत्नों के शहर गुलाबी नगरी में ऐसे-ऐसे हीरे हैं, जिनकी चमक से आज अभातेयुप परिवार रोशन हो रहा है।

प्रसिद्ध समाजसेवी व उद्योगपति दलपत लोढ़ा, तेजमल हितेश विपिन कोठारी, श्रेयांस पारख, नोरतनमल जतन बोकड़िया, संदीप जैन लुणावत, संदीप जैन के सौजन्य से आयोजित समारोह में संस्कृति के विविध रूप बिखरे। परिषद अध्यक्ष राजेश छाजेड़ व समाज के विशिष्ट पदों पर आसीन महानुभावों व कार्यक्रम के प्रायोजकों ने सभी विशिष्ट अतिथियों को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

फरीदाबाद।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, फरीदाबाद द्वारा 'Who Am I To I Am' विषय पर व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन में आगाज हुआ। आनंद मेहता इस कार्यशाला के प्रशिक्षक थे। तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल के ३१ सहभागियों ने इस कार्यशाला को जानने-समझने का प्रयास किया। जिसमें सभी ने 'Collaboration, confidence, trust, visualisation' जैसे बातों पर प्रैक्टिकली अध्ययन कर उसे अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा ली और अपने अंदर की प्रतिभा को कैसे सभी के समक्ष रखना है। हर्ष का विषय यह भी रहा कि नव वर्ष में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी से ऊर्जा प्राप्त कर संगठन यात्रा 'सार-संभाल' तथा इस कार्यशाला के लिए अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा अपनी धर्मपत्नी रेखा डागा संग फरीदाबाद पधारे।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सभी साथियों का स्वागत जैन चिह्न पहनाकर किया गया। स्वागत भाषण में तेयुप, फरीदाबाद के अध्यक्ष राजेश जैन ने सभी का स्वागत किया व फरीदाबाद में तेयुप के निरंतर किए गए कार्यों व आगे के कार्यों की रूपरेखा अपने वक्तव्य में की।

अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा ने सभी सहभागियों तथा युवासाथियों का अपने उद्बोधन से उत्साहवर्धन किया। इस कार्यशाला में समाज के वरिष्ठ श्रावक बहादुर सिंह दुगड़, आई०सी० जैन, गुलाब बैद, नवीन छाजेड़, मुकेश जैन, नरेंद्र घोषल, उपासिका सुशीला दुगड़, ललिता बैद सहित अन्य श्रावक भी उपस्थित थे। जिस कार्यक्रम की शुरुआत शानदार हुई उसका समापन भी शानदार हुआ।

कार्यक्रम में जुड़ी कुछ झलकियाँ एक फोटोफ्रेम समाहित करके एक यादगार दिनेश बुरड़ एवं शाखा प्रभारी जतन श्यामसुखा, अभातेयुप समिति सदस्य विकास चोरड़िया, प्रशिक्षक आनंद मेहता को भेंट की गई। मंच संचालन भरत बेगवानी ने किया अंत में आभार ज्ञापन तेयुप, फरीदाबाद के उपाध्यक्ष विवेक बैद ने किया।

किशोर फिएस्टा का आयोजन

पर्वत पाटिया।

तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा किशोर फिएस्टा का आयोजन किया गया। जिसकी शुरुआत जैन संस्कार विधि से संस्कारक रवि मालू द्वारा की गई। जिसमें सामुहिक जन्मोत्सव से नवंबर-दिसंबर के माह वाले किशोर युवकों का जन्मदिवस मनाया गया। सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारख, सीपीएस के राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी, किशोर मंडल प्रभारी शुभम नाहटा, संयोजक जिग्नेश गांधी, सह-संयोजक पारख गंग, नवीन गोलछा एवं श्रावक समाज की उपस्थिति में नमस्कार महामंत्र से फनफेयर फिएस्टा का शुभारंभ हुआ।

फिएस्टा में किशोरों द्वारा पूरे श्रावक समाज के लिए खेल मनोरंजन, तरह-तरह के व्यंजन, खाद्य पदार्थ, आर्ट, स्टार्टअप स्टॉल ऐसे कुल २७ स्टॉल रहे और फिएस्टा में किशोर मंडल में ३ नए किशोरों को भी जोड़ा गया।

कार्यक्रम में अभातेयुप के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी, किशोर मंडल राष्ट्रीय प्रभारी विशाल पितलिया, सरगम के राष्ट्रीय प्रभारी सुनील चंडालिया, स्थानीय तेयुप के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं सीपीएस के राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी, ब्लू ब्रिगेड सदस्य जिनेश जैन, मयंक डागा की उपस्थिति रही। लगभग ६०० लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। फिएस्टा में बेस्ट स्टॉल से स्नेह कोठारी को पुरस्कृत किया गया एवं २ लकी ड्रॉ तथा १७ पुरस्कार दिए गए। फिएस्टा में अपना सहयोग देने वाले सभी प्रायोजकों का सम्मान किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 - 16 जनवरी, 2022

✦ *संप्रदाय का महत्त्व है, किंतु सत्य का महत्त्व व सम्मान उससे अधिक है। सच्चाई को खोजने का यथोचित प्रयास होना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आलोचना का जवाब कार्य से दें तो आलोचक भी प्रशंसक बन जाते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

अर्बन विलेजेज, २ जनवरी, २०२२

युग प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म के अनेक प्रकार बताए गए हैं, उनमें एक प्रकार है–क्षमा धर्म। क्षमा को खड्ग भी कहा गया है। जिस आदमी के पास क्षमा रूपी खड्ग है, दुर्जन उसका क्या बिगाड़ पाएगा।

एक शस्त्र होता है, आयस शस्त्र-लोहे का शस्त्र। दुनिया में बैर-भाव भी होता है। युद्ध-लड़ाई भी होती है। द्रव्य शास्त्रों द्वारा दूसरों को पराजित करने का और जीतने का प्रयास किया जाता है। जहाँ परिग्रह है, वहाँ हिंसा भी हो सकती है। दोनों का गहरा संबंध है। हिंसा कार्य है, परिग्रह उसका कारण है। परिग्रह हिंसा का मूल है।

हिंसा के अनेक कारण हैं, उसमें मूल कषाय–राग-द्वेष हैं। आयस एक शस्त्र है, तो मैत्री और मार्दव रूपी शस्त्र द्वारा दूसरे को जीता जा सकता है। यह एक आध्यात्मिक व परम शस्त्र है। सबको आयस शस्त्र से जीत पाना मुश्किल है।

मार्दव-मैत्री के शस्त्र से दूसरों को निकट किया जा सकता है। आदमी प्रणत हो सकता है, अहिंसा की प्रतिष्ठा हो जाती है, आदमी का मन अहिंसा से आप्लावित-ओत-प्रोत हो जाता है, उसकी सन्निधि में कोई आता है, तो बैर-भाव दूर हो जाता है। खुद की अहिंसा सामने वाले को झुका सकती है। हम झुकेंगे तो दूसरों को भी झुका सकेंगे। प्रेम-मैत्री का प्रयोग करो।

दूसरों के मन को जीतना है, तो वहाँ आयस शस्त्र काम का नहीं, मार्दव शस्त्र का प्रयोग करो। हमारे जीवन में क्षमा का बड़ा महत्त्व है। आई-गई करो तो दिमाग हल्का रहता है। गुस्सा तो किसी के भी काम का नहीं है। असफलता का कारण गुस्सा बन सकता है। दस धर्मों में क्षमा एक धर्म है। क्षमा मुक्ति का द्वार है। जीवन में क्षमा का प्रयोग करें। सार की बात है, तो उसे ग्रहण कर लो पर गुस्सा न करो। यह एक प्रसंग से समझाया कि उपयोगी चीज को ले लेना चाहिए।

कोई आलोचना-निंदा करे उसका जबान से जवाब न देकर, लेखनी से न देकर, अच्छे कार्यों से जवाब दो। तो निंदा करने वाले प्रशंसक बन सकते हैं। वाक् युद्ध में समय न लगाकर संबुद्ध बनें। अच्छे कार्यों से जवाब दो। हमारे तन-मन की शक्ति अच्छे प्रयोजन में लगे। गाली देने वाले का मुँह बिगड़ेगा। अध्यात्म जगत में बुरी बात के लिए जेसे को तैसा आवश्यक नहीं है।

क्षमा धर्म हमारे जीवन में विकसित हो, पुष्ट हो जाए। क्षमा की साधना से हम मुक्ति की साधना में आगे बढ़ सकते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अर्बन विलेजेज से उमेश भंडारी, डागा परिवार, दलपत लोढ़ा, ने अपनी भावना-अभिव्यक्त की। संजय भानावत ने अपनी कृति मेरे महाश्रमण भगवान श्री चरणों में अर्पित की। शशि लोढ़ा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

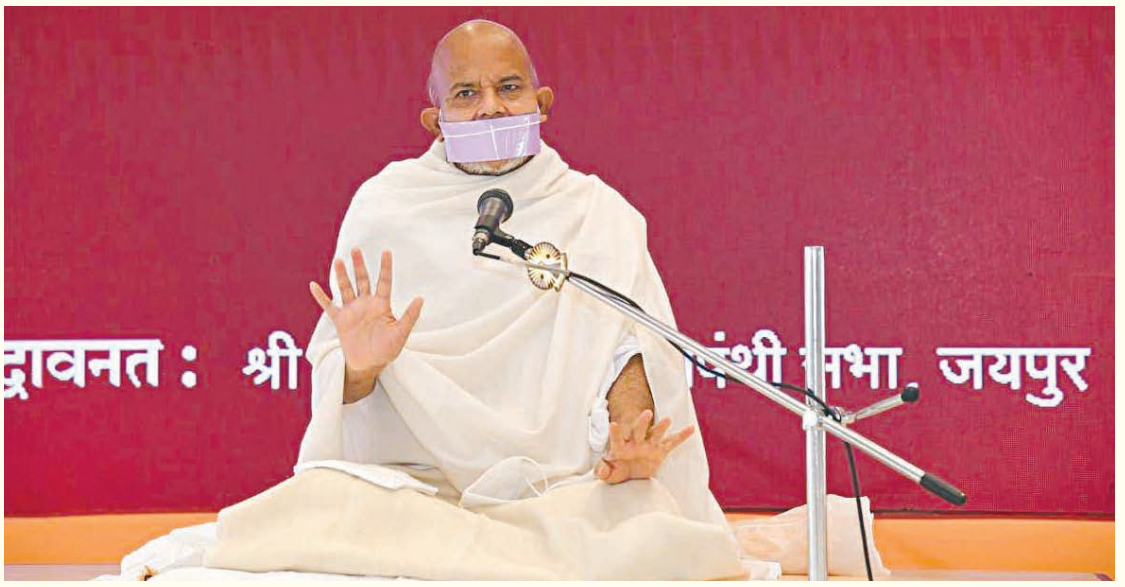

ए डायलॉग विद आचार्यश्री महाश्रमण संगोष्ठी

मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के उपरांत दोपहर डेढ़ बजे अर्बन विलेज परिवार द्वारा 'ए डायलॉग विद आचार्यश्री महाश्रमण' नामक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें राजस्थान मुख्यमंत्री के मुख्य सचिव कुलदीप रांका, पुलिस महानिदेशक-राजस्थान मोहनलाल लाठर, पूर्व लोकायुक्त सज्जनसिंह कोठारी, महावीर विकलांग समिति (जयपुर फुट) के अध्यक्ष डी०आर० मेहता, पूर्व महानिदेशक मनोज भट्ट, नवदीप सिंह, कपिल गर्ग, पूर्व शिक्षा सचिव राजेंद्र भानावत, आईपीएस (सेटेलमेंट विभाग) के महेंद्र पारख, पूर्व प्रिंसिपल सेक्रेटरी आर०पी० जैन, पुलिस महानिरीक्षक जयनारायण, शरद कविराज, टूरिज्म विभाग के डायरेक्टर निशांत जैन, ट्रांसपोर्ट विभाग के कमिश्नर रवि जैन, हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता गोवर्धन सिंह, अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष कल्पना ईनानी सहित अनेकानेक उच्च प्रशासनिक अधिकारी, उद्योगपति, शिक्षाविद्, जज, अधिवक्ता आदि की विशिष्ट उपस्थिति थी। आचार्यश्री ने सभी को जन्म-मृत्यु और जीवन जीने की विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि गृहस्थ जीवन में पूर्णतया अहिंसक और परिग्रह का त्याग न हो तो भी आदमी चार बातों का ध्यान दे लें तो भी मोक्ष की दिशा में गति कर सकता है। इनमें सबसे पहला है–ईमानदारी। आदमी के व्यवहार में ईमानदारी रहे। आदमी चाहे किसी पद पर रहे, घर में रहे, व्यवसाय में रहे, प्रतिष्ठान में रहे, परिवार में रहे ईमानदारी बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। ईमानदारी का मार्ग कठिन हो सकता है, किंतु उसकी मंजिल अच्छी हो सकती है। दूसरी बात है आदमी को अहिंसात्मक जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। बिना मतलब किसी दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिए। तीसरी बात है कि आदमी को अपने जीवन में संयम रखने का प्रयास करना चाहिए। चौथी बात है कि आदमी को ध्यान-साधना के माध्यम में समय का नियोजन कर मोक्ष की दिशा में गति की जा सकती है। वरिष्ठजनों ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत की तो आचार्यश्री ने सभी की जिज्ञासाओं का समाधान भी प्रदान किया। आचार्यश्री के प्रवचन श्रवण, दर्शन व मंगल मार्गदर्शन प्राप्त कर सभी अभिभूत नजर आ रहे थे। इसके पूर्व मुनि कुमार श्रमण जी ने आचार्यश्री, अहिंसा यात्रा आदि के विषय में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन पूर्व डीजीपी राजीव दासौत ने किया। उमेश भंडारी ने आभार ज्ञापित किया।

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

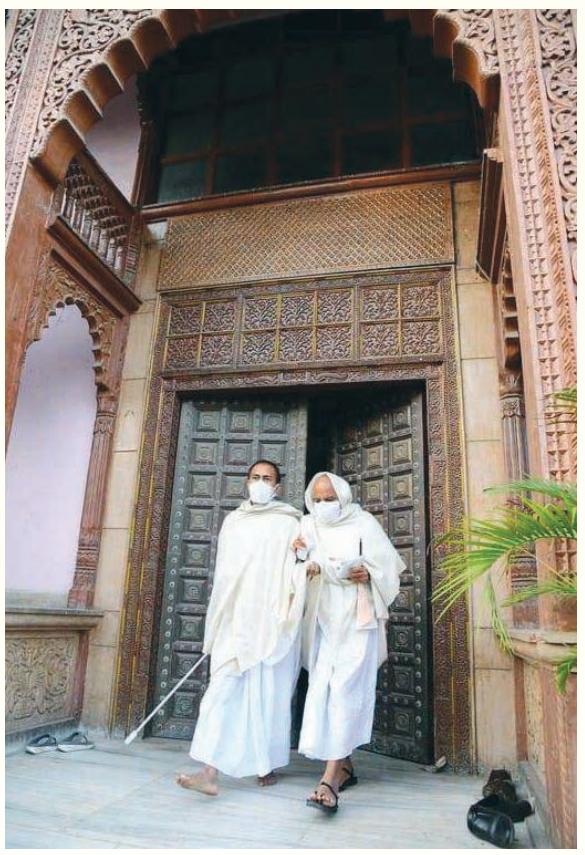

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**